शेमुषी

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

शेमुषी

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-470-2

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927
पुनर्मुद्रण
जनवरी 2007 पौष 1928
दिसंबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2017 पौष 1938

PD 6T RPS

© *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006*

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शकुन प्रिंटर्स, 241, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली 110 092 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *गौतम गांगुली*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	: *अरुण चितकारा*
सहायक संपादक	: *ओम प्रकाश*
उत्पादन अधिकारी	: *अब्दुल नईम*

चित्रांकन *सुजीत सिंह*

आवरण *आलोक हरि*

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य चित्रकरणाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां,

संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी. पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्ष्ये संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

जनवरी 2006
नवदेहली

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

राधावल्लभ त्रिपाठी, *पूर्व अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

राजेन्द्र मिश्र, *पूर्वकुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

उमाशंकर शर्मा, (सेवानिवृत्त) *संस्कृत विभागाध्यक्ष*, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

रमेशकुमार पाण्डेय, *अध्यक्ष*, शोध एवं प्रकाशन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली।

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *प्रोफेसर* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

शशी तिवारी, *रीडर*, संस्कृत विभाग, मैत्रेयी कालेज, नयी दिल्ली।

निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी.*, केन्द्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैम्पस, नयी दिल्ली।

आभा झा, *टी.जी.टी.*, श्री वीरचन्दसिंह गढ़वाली रा.व.मा.बा.विद्यालय, जे ब्लाक, साकेत, नयी दिल्ली।

भारतेन्दु मिश्र, *टी.जी.टी.*, एल-187, दिलशाद गार्डन, नयी दिल्ली।

आदर्श अहूजा, *टी.जी.टी.*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् श्री जानकीवल्लभ शास्त्री, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, श्री वाई. महालिङ्ग शास्त्री तथा श्री पद्मशास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य सामग्री संकलित की गई है।

पुस्तक की योजना-निर्माण से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक समिति के समन्वयक व उनके विभागीय सहयोगी प्रो. कमलाकान्त मिश्र तथा श्री रणजित बेहेरा, प्रवक्ता साधुवाद के पात्र हैं।

❖ ❖ ❖

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। श्रद्धावश लोग इसे देववाणी तथा सुरभारती भी कहते थे। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है। राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसमें रचित साहित्य का सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, पृथ्वी-प्रेम, परोपकार, त्याग तथा सत्कर्म आदि भावनाओं के प्रसारण में अमूल्य योगदान है। संस्कृत का समकालीन साहित्य आधुनिक समस्याओं तथा मानव के संघर्षों को भी आत्मसात् करता है, जिससे विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर नहीं माना जा सकता है।

प्राचीनकाल में, संस्कृत की रचनाएँ हजारों वर्षों तक मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहीं तो आज की संस्कृत-कृतियों का वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी प्रगति के साथ समन्वय उन्हें अद्यतन बनाता है। यह गौरव का विषय है कि न्यूनतम चार हजार वर्षों की संस्कृत-साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्रायः प्रामाणिक रूप से होता रहा है, जहाँ भारतीय संस्कृति की समन्वय-प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

संस्कृत को मात्र प्राचीनता के लिए ही पढ़ना पर्याप्त नहीं है, अपितु अपने देश के बहुभाषिक परिदृश्य में संस्कृत की महत्ता राष्ट्र की एकता के लिए सर्वोपरि है। आधुनिक भारतीय भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण, शब्द-सम्पत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। अन्य भाषाओं के समान आधुनिक संस्कृत भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multi-lingualism) का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य के दो रूप प्राप्त होते हैं-वैदिक तथा लौकिक। **वैदिक साहित्य** के अन्तर्गत **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक** तथा **उपनिषद्** ग्रन्थ आते हैं। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद**-इन चारों वेदों को **संहिता** कहते हैं। इन संहिताओं में जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्ड परक व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को **'ब्राह्मण'** कहा जाता है। आरण्यकों की रचना वनों में हुई। इनमें वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या है। उपनिषदों

में वैदिक ज्ञान का प्रौढ़तम रूप प्राप्त होता है। इसलिए इनके सिद्धांतों को **'वेदान्त'** भी कहते हैं। वैदिक साहित्य को सही सन्दर्भ में समझने के लिए वेदाङ्गों की रचना हुई, वेदाङ्ग छह हैं-**शिक्षा** (उच्चारण-विज्ञान), **व्याकरण** (पद-विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मंत्रों की छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ-विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)। कहा गया है-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

लौकिक संस्कृत साहित्य का आरम्भ आदिकवि वाल्मीकि के **रामायणम्** से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम के जीवन चरित का वर्णन है। इसे आदि काव्य भी कहा जाता है। प्रथम संस्कृत काव्य होने के अतिरिक्त रामायण परवर्ती संस्कृत कवियों के लिए प्रेरक तथा उपजीव्य ग्रन्थ है। इसमें सात काण्ड तथा 24000 श्लोक हैं। काण्डों का विभाजन सर्गों में हुआ है।

रामायण के अतिरिक्त महर्षि वेदव्यास-रचित एक लाख श्लोकों का **महाभारत** भी कवियों तथा साहित्यकारों के लिए कथानक-ग्रहण करने का आधार-ग्रन्थ रहा है। इसमें कौरवों तथा पाण्डवों की कथा है। दोनों के बीच ऐसे युद्ध का वर्णन है जहाँ अन्याय पर न्याय की विजय दिखाई गई है **(यतो धर्मस्ततो जयः)**। इसमें 18 **पर्व** हैं जिनके नाम मुख्य विषय-वस्तु के आधार पर दिये गये हैं। महाभारत में भारतीय जीवन-पद्धति के सभी पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। कहा गया है कि जो इसमें वर्णित है, वही सर्वत्र साहित्य में पल्लवित है किन्तु जो इसमें प्रतिपादित नहीं वह अन्यत्र कहीं नहीं है-**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।** इसके अतिरिक्त एक सामान्य लोकोक्ति भी प्रचलित है-**यन्न भारते तन्न भारते** (अर्थात् जो महाभारत में नहीं, वह भारत में नहीं)। **भगवद्गीता** महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है जिसमें युद्ध से विरत अर्जुन को श्रीकृष्ण ने कर्मपथ के उपदेश दिये हैं।

रामायण तथा **महाभारत** के समान पुराणों का भी महत्त्व है। इनका विपुल साहित्य 18 पुराणों में विद्यमान है। इनमें प्राचीन भारत के जन-जन के लिए सभी ज्ञातव्य विषयों का संग्रह है। आरम्भ में इनमें पाँच मुख्य विषयों का प्रतिपादन करने का लक्ष्य था-**सर्ग** (जगत् की सृष्टि), **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रलय), **वंश** (देवों तथा ऋषियों की वंशावली), **मन्वन्तर** (विभिन्न युगों की घटनाओं का वर्णन) तथा **वंशानुचरित** (प्रसिद्ध राजाओं की वंश-परंपरा)। इसी पृष्ठभूमि में पुराणों के पाँच लक्षण कहे गये हैं-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

आगे चलकर पुराणों ने समस्त सांस्कृतिक पक्षों को आत्मसात् कर लिया। इसी कारण इनमें भारतीय समाज का प्रतिबिम्बन प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा के महत्त्व, पर्वतों-वनों-नदियों के प्रति श्रद्धा-प्रदर्शन तथा सदाचार-वर्णन के कारण पुराणों ने भारत की सांस्कृतिक एकता तथा नैतिक आचरण के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

इनके अनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के प्रस्फुटन एवं विकास का काल है। एक ओर नाटकों के अनेक रूपों का इतिहास है तो दूसरी ओर संस्कृत महाकाव्यों, लघुकाव्यों, गद्यकाव्यों तथा चम्पू (गद्य-पद्ययुक्त) काव्यों की दीर्घ परम्परा है जो आज तक अनवरत चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ की हैं जैसे संस्कृत के सबसे बड़े कवि कालिदास ने महाकाव्यों (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्), गीतिकाव्यों (मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्) तथा नाटकों (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा विक्रमोर्वशीयम्) की रचना की।

अन्य प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के लेखक), शूद्रक (मृच्छकटिकम्), विशाखदत्त (मुद्राराक्षसम्), हर्ष (3 नाटक), भवभूति (उत्तररामचरितम् जैसे 3 नाटक), भट्टनारायण (वेणीसंहारम्) इत्यादि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन आदि के द्वारा अपने युग के जन-जीवन के विकृत पक्ष पर व्यङ्ग्यपूर्ण दृष्टि डाली है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष (बुद्धचरितम् और सौन्दरनन्दम्), भारवि (किरातार्जुनीयम्), भट्टि (रावणवधम्), माघ (शिशुपालवधम्), क्षेमेन्द्र (पाँच महाकाव्यों के अतिरिक्त अनेक व्यंग्यकाव्यों के लेखक कश्मीरी कवि), श्री हर्ष (नैषधीयचरितम्) इत्यादि हैं। बिल्हण (विक्रमाङ्कदेवचरितम्), कल्हण (राजतरङ्गिणी) आदि ने ऐतिहासिक काव्य लिखे हैं।

गीतिकाव्यों या लघुकाव्यों के प्राचीन लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृङ्गार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतकम्), जयदेव (गीतगोविन्दम्), जगन्नाथ (भामिनीविलासः) इत्यादि प्रसिद्ध हैं। गद्यकवियों में सुबन्धु (वासवदत्ता), बाणभट्ट (हर्षचरितम् तथा कादम्बरी), दण्डी (दशकुमार-चरितम्), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराजविजयम्) इत्यादि विख्यात हैं।

संस्कृत साहित्य की समीक्षा के विषय में भरतमुनि (नाट्यशास्त्रम्), भामह (काव्यालङ्कार), दण्डी (काव्यादर्श), वामन (काव्यालङ्कारसूत्र), आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक), मम्मट (काव्यप्रकाशः), विश्वनाथ (साहित्यदर्पण), जगन्नाथ (रसगङ्गाधरः) प्रभृति लेखकों की लम्बी परम्परा उपलब्ध है। इसी प्रकार व्याकरण, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि शास्त्रों की स्वतन्त्र एवं दीर्घ परम्परा चली है जिसमें सहस्राधिक ग्रन्थ संस्कृत के गौरव की वृद्धि करते हैं।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए

वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्चर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं-

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
2. शिक्षा की आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुति।
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना।
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को चिन्तन के लिए प्रेरित करना।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए **शेमुषी** (प्रथमो भाग:) नामक पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम एवं वर्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसी दृष्टि से इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ ही साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित रचनाओं को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरंभ में पाठ-संदर्भ दिये गये हैं, जिनसे छात्र पाठ-प्रसंग को सरलता से समझ सकेंगे। छात्रों को सीखने के अधिकाधिक अवसर देने के लिए पाठों के अन्त में विविध-प्रश्नों वाली अभ्यासचारिका दी गयी है।

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्था:' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आये सभी नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिये गये हैं। योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गयी है, जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज ही उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए यथेष्ट रूप से शिक्षण-संकेत भी दिये गये हैं ताकि निर्धारित पाठ्यबिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापन किया जा सके। पाठों को दृश्य-विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्रों का समावेश करके पुस्तक को आकर्षक बनाया गया है।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गये हैं जिनमें छह पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा छह पाठ आधुनिक रचनाओं से हैं। आधुनिक पाठों में भी चार पाठ संस्कृत की मौलिक रचनाओं तथा दो पाठ दूसरी भाषाओं से अनुवाद के रूप में हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में तीन प्रकार की पाठ-सामग्री है-

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से - लौहतुला, सूक्तिमौक्तिकम्, जटायो: शौर्यम्, कल्पतरु:, वाङ्मन:प्राणस्वरूपम् तथा प्रत्यभिज्ञानम्।

(ख) आधुनिक मौलिक रचनाओं से - सोमप्रभम्, भारतीवसन्तंगीति:, भ्रान्तो बाल: तथा सिकतासेतु:।

(ग) संस्कृत में अनूदित / निर्मित रचनाओं से-स्वर्णकाकः तथा पर्यावरणम्।

पाठ-सामग्री को यथासंभव मूलरूप में ही रखा गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए यत्र-तत्र सम्पादित कर उन्हें सरल बनाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत वाङ्मय के जिन ग्रन्थों से सामग्री ली गयी है उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. **पञ्चतन्त्रम्** - सरल संस्कृत भाषा में नीति की शिक्षा देने वाले कथा-ग्रन्थों में पञ्चतन्त्रम् का अत्यधिक महत्त्व है। इसमें विष्णुशर्मा ने एक राजा के तीन मूर्ख पुत्रों को छह मास में राजनीति और व्यवहार में कुशल बनाने के लिए कथाएँ कही हैं। इसका विभाजन पाँच तन्त्रों (खण्डों) में है-मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक। प्रत्येक तन्त्र में एक मुख्य कथा तथा उसके भीतर अवान्तर कथाएँ हैं। कथाओं को परस्पर ऐसा गूँथा गया है कि एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत हो जाता है। इसका स्वरूप गद्य-पद्यात्मक है। सामान्यतः कथा गद्य में तथा नैतिक शिक्षा पद्य में है।
2. **मनुस्मृति** - मनु द्वारा प्रतिपादित प्राचीन भारतीय समाज की आचार-संहिता का यह पद्यात्मक ग्रन्थ 12 अध्यायों का है। इसमें प्राचीन भारतीय समाज के लिए पालन करने योग्य नियमों का व्यापक संकलन है।
3. **विदुरनीतिः** - महाभारत के उद्योग पर्व में कुरुवंशी विद्वान् विदुर द्वारा दिये गये उपदेशों का संग्रह है जो भगवद्गीता के समान स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में है। इसमें नौ अध्याय हैं।
4. **चाणक्यनीतिः** - इसके रचयिता चाणक्य हैं। इसमें 17 अध्याय तथा 340 श्लोक हैं। लोकव्यवहार की शिक्षा सरल श्लोकों में देने के कारण नीतिग्रन्थों में यह बहुत लोकप्रिय है।
5. **सुभाषितरत्नभाण्डागारम्** - अनेक कवियों द्वारा रचित तथा अज्ञातकर्तृक श्लोकों का संग्रह है। इसमें प्रायः दस हजार छोटे-बड़े श्लोक हैं।
6. **मृच्छकटिकम्** - शूद्रक द्वारा रचित 10 अंकों का सामाजिक नाटक (प्रकरण) है, जिसमें दरिद्र किन्तु कभी संपन्न स्थिति में रहे वाणिज्यजीवी ब्राह्मण चारुदत्त तथा गणिका वसन्तसेना की प्रेमकथा है। इसमें प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था तथा निरंकुश राजतन्त्र का चित्रण है।
7. **नीतिशतकम्** - भर्तृहरि रचित एक सौ से अधिक सरल तथा नीति-विषयक पद्यों का ग्रन्थ है। इसमें मूर्खों की असाध्यता, विद्वानों के महत्त्व, धन की शक्ति, मनस्विता इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।
8. **भामिनीविलासः** - संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट कवि तथा काव्यशास्त्री आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित स्फुट (मुक्तक) पद्यों का संग्रह है, जिसमें चार भाग (विलास)

हैं - अन्योक्ति, शृङ्गार, करुण तथा शान्त। प्रथम विलास में कवि ने सिंह, हंस, कमल, मधुकर, चन्दन, मेघ, समुद्र आदि को लक्षित कर सुन्दर तथा भावपूर्ण अन्योक्तियाँ दी हैं।

9. **हितोपदेश** - नारायण पण्डित द्वारा रचित नीतिकथाओं की लोकप्रिय पुस्तक है। इसकी 43 कथाओं में 25 **पञ्चतन्त्र** से ही ली गई हैं। इसके चार भाग हैं-मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि। कथा कहने की इसकी पद्धति पञ्चतन्त्र के समान है।

10. **रामायणम्** - आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत भाषा का आदिकाव्य है, जिसमें मर्यादा पुरुष राम के जीवन का काव्यात्मक वर्णन है। यह सात काण्डों में विभक्त है- बाल, अयोध्या, आरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध तथा उत्तर। प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है।

11. **वेतालपञ्चविंशतिः** - अत्यन्त प्राचीन 25 लोककथाओं का संग्रह है। संस्कृत साहित्य में इन कथाओं का प्राचीनतम रूप क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेव के कथासरित्सागर में मिलता है। ये दोनों कथाग्रन्थ पैशाची प्राकृत में गुणाढ्य द्वारा रचित 'बड्डकहा' (बृहत्कथा) के संस्कृत पद्य रूपान्तर हैं। **'वेतालपञ्चविंशतिः'** के नाम से संस्कृत में दो स्वतंत्र संस्करण हैं। प्रथम संस्करण शिवदास कृत है जो मुख्यतः गद्यात्मक है, इसमें कहीं-कहीं पद्य भी हैं। दूसरा संस्करण जम्भलदत्त कृत है जो पूर्णतः गद्य रूप में है। इसकी लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि इसकी कथाओं का भारत की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

12. **छान्दोग्योपनिषद्**- सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बद्ध उपनिषद् है जो आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें अनेक रोचक कथाओं द्वारा दार्शनिक विषयों को स्पष्ट किया गया है।

13. **पञ्चरात्रम्**- इसके रचयिता भास हैं जिसका कथानक महाभारत से लिया गया है।

14. **कथासरित्सागर** - यह गुणाढ्यकृत प्राकृत कथाग्रन्थ (बृहत्कथा) का विशालतम संस्कृत संस्करण है। इसमें 18 लम्बक तथा 24000 श्लोक हैं। इसकी रचना कश्मीरी कवि सोमदेव ने राजा अनन्तदेव की पत्नी सूर्यमती के मनोरंजन के लिए की थी।

जिन आधुनिक रचनाओं को इस पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है उनके लेखकों में श्री **जानकीवल्लभ शास्त्री** संस्कृत तथा हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। **काकली** तथा **बन्दीमन्दिरम्** इनकी आरम्भिक संस्कृत रचनाएँ हैं। **डॉ॰ राधावल्लभ त्रिपाठी** आधुनिक युग के संस्कृत विद्वानों तथा संस्कृत भाषा-साहित्य के अनेक क्षेत्रों में कार्य करने वाले लेखकों में अग्रणी हैं। इनके नाटकों में **प्रेमपीयूषम्,**

तण्डुलप्रस्थीयम्, प्रेक्षणसप्तकम् इत्यादि महत्त्वपूर्ण हैं। **श्री वाई. महालिङ्ग शास्त्री** ने काव्य, नाटक, कथा आदि सभी प्रकार की रचनाएँ की हैं। **'संस्कृत प्रौढपाठावलिः'** इनकी विविध कथाकृतियों का संकलन है। **पद्मशास्त्री** ने संस्कृत की कई विधाओं को समृद्ध किया। **विश्वकथाशतकम्** में संसार के विभिन्न देशों की एक सौ श्रेष्ठ कहानियों का संक्षिप्त संस्कृत रूपान्तर प्राप्त होता है।

आशा है कि यह भूमिका छात्रों को संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के विकास के साथ-साथ संकलित पाठों के मूलग्रंथों तथा ग्रन्थकारों से परिचय प्रदान करेगी।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता (Creativity) का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

ध्यातव्य बिन्दवः -

1. **भारती वसन्तगीतिः** - शिक्षक छात्रों के उच्चारण व सस्वरवाचन/गायन पर जोर दें।
2. **स्वर्णकाकः** - कथा को पहले रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। प्रत्ययों का सामान्यज्ञान पाठान्त में अवश्य दें।
3. **सोमप्रभम्** - एकाङ्की पढ़ाते समय आधुनिक परिवेश से जोड़ें तथा समाज में घटने वाली दुर्घटनाओं से साम्य बतलाते हुए प्रयत्न करें ताकि छात्रों में अन्याय के प्रतिरोध की प्रवृत्ति जागे। (अन्यायेन समं सन्धिः अनाचारप्रवर्धनम्) पाठ की कथा नाटकीयता के साथ पढ़ाई जाये। संवादों के माध्यम से अभिनय कराया जा सकता है।
4. **कल्पतरुः** - पाठ के साथ-साथ विशेष्य-विशेषण, कारक और तद्धित प्रत्यय का ज्ञान कराएँ।
5. **सूक्तिमौक्तिकम्** - श्लोकों का सस्वरवाचन अवश्य सिखाएँ।
6. **भ्रान्तो बालः** - रोचक ढंग से कथा प्रस्तुत करें। तत्पुरुष समास व विभक्ति प्रयोग बताएँ।
7. **प्रत्यभिज्ञानम्** - नाट्ययुक्ति के सहारे कक्षानाटक के रूप में पाठ पढ़ाया जाए। महाभारत की कथा पृष्ठभूमि के रूप में बताएँ।

8. **लौहतुला** - रोचक ढंग से कथा शिक्षण करें व कथा का संदेश (न्याय की सूक्ष्म दृष्टि न्यायाधिकारी में होनी चाहिए) छात्रों को दें।
9. **सिकतासेतुः** - कथा की रोचकता बरकरार रखते हुए कथा का संदेश प्रभावी ढंग से दें।
10. **जटायोः शौर्यम्** - वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त परिचय छात्रों को दें और श्लोकों का सस्वर वाचन छात्रों से करवाएँ। स्त्रीप्रत्यय का परिचय दें।
11. **पर्यावरणम्** - प्राचीन भारत में पर्यावरण की सुरक्षा व वर्तमान में प्रदूषण के संकट से परिचित कराते हुए छात्रों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।
12. **वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्** - प्राचीन वाङ्मय (वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, पुराण आदि) का संक्षिप्त परिचय दें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि इस संकलन को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
	पुरोवाक्	*v*
	भूमिका	*ix*
	मङ्गलम्	1-1
1.	भारतीवसन्तगीतिः	2-6
2.	स्वर्णकाकः	7-16
3.	सोमप्रभम्	17-25
4.	कल्पतरुः	26-31
5.	सूक्तिमौक्तिकम्	32-37
6.	भ्रान्तो बालः	38-44
7.	प्रत्यभिज्ञानम्	45-55
8.	लौहतुला	56-62
9.	सिकतासेतुः	63-70
10.	जटायोः शौर्यम्	71-77
11.	पर्यावरणम्	78-84
12.	वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्	85-90

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ।।1।।

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ।।2।।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।3।।

1. जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः), जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं; वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे ।।1।।

2. जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं; जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः); जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों तथा चलने-फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें गौ-आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे ।।2।।

3. अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली (अनपस्फुरन्ती) स्थिर-जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उस प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो ।।3।।

प्रथमः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

प्रस्तुत गीत आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि **पं. जानकी वल्लभ शास्त्री** की रचना **'काकली'** नामक गीतसंग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुर मञ्जरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम् ।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम् ।।1।।
निनादय...।।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ।।2।।
निनादय...।।

ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ।।3।।
निनादय...।।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ।।4।। निनादय...।।

शब्दार्थाः

निनादय	नितरां वादय	गुंजित करो/बजाओ
मृदुं	चारु, मधुरं	कोमल
ललितनीतिलीनाम्	सुन्दरनीतिसंलग्नाम्	सुन्दर नीति में लीन
मञ्जरी	आम्रकुसुमम्	आम्रपुष्प
पिञ्जरीभूतमालाः	पीतपङ्क्तयः	पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ
लसन्ति	शोभन्ते	सुशोभित हो रही हैं
इह	अत्र	यहाँ
सरसाः	रसपूर्णाः	मधुर
रसालाः	आम्राः	आम के पेड़
कलापाः	समूहाः	समूह
काकली	कोकिलानां ध्वनिः	कोयल की आवाज
सनीरे	सजले	जल से पूर्ण
समीरे	वायौ	हवा में
कलिन्दात्मजायाः	यमुनायाः	यमुना नदी के
सवानीरतीरे	वेतसयुक्ते तटे	बेंत की लता से युक्त तट पर
नताम्	नतिप्राप्ताम्	झुकी हुई
मधुमाधवीनाम्	मधुमाधवीलतानाम्	मधुर मालती लताओं का
ललितपल्लवे	मनोहरपल्लवे	मन को आकर्षित करने वाले पत्ते
पुष्पपुञ्जे	पुष्पसमूहे	पुष्पों के समूह पर
मलयमारुतोच्चुम्बिते	मलयानिलसंस्पृष्टे	चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गये
मञ्जुकुञ्जे	शोभनलतावितान	सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान
स्वनन्तीं	ध्वनिं कुर्वन्तीम्	ध्वनि करती हुई
ततिं	पङ्क्तिम्	समूह को
प्रेक्ष्य	दृष्ट्वा	देखकर

मलिनाम्	कृष्णवर्णाम्	मलिन
अलीनाम्	भ्रमराणाम्	भ्रमरों के
सुमम्	कुसुमम्	पुष्प को
शान्तिशीलम्	शान्तियुक्तम्	शान्ति से युक्त
उच्छलेत्	ऊर्ध्वं गच्छेत्	उच्छलित हो उठे
कान्तसलिलम्	मनोहरजलम्	स्वच्छ जल
सलीलम्	क्रीडासहितम्	खेल-खेल के साथ
आकर्ण्य	श्रुत्वा	सुनकर

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) कविः वीणापाणिं किं कथयति?

(ख) वसन्ते किं भवति?

(ग) सरस्वत्याः वीणां श्रुत्वा किं परिवर्तनं भवतु इति कवेः इच्छां लिखत।

(घ) कविः भगवतीं भारतीं कस्याः नद्याः तटे (कुत्र) मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति?

2. 'क' स्तम्भे पदानि, 'ख' स्तम्भे तेषां पर्यायपदानि दत्तानि। तानि चित्वा पदानां समक्षे लिखत-

'क' स्तम्भः	**'ख' स्तम्भः**
(क) सरस्वती	(1) तीरे
(ख) आम्रम्	(2) अलीनाम्
(ग) पवनः	(3) समीरः
(घ) तटे	(4) वाणी
(ङ) भ्रमराणाम्	(5) रसालः

3. अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतभाषया वाक्यरचनां कुरुत-

(क) निनादय (ख) मन्दमन्दम्

(ग) मारुतः (घ) सलिलम्

(ङ) सुमनः

4. प्रथमश्लोकस्य आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-

5. अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत-

(क) कठोरम् - .....

(ख) कटु - .....

(ग) शीघ्रम् - .....

(घ) प्राचीनम् - .....

(ङ) नीरसः - .....

परियोजनाकार्यम्

पाठेऽस्मिन् वीणायाः चर्चा अस्ति। अन्येषां पञ्चवाद्ययन्त्राणां चित्रं रचयित्वा संकलय्य वा तेषां नामानि लिखत।

योग्यताविस्तारः

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललितनीतिलीनां गीतिं मृदुं गाय।

हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो।

इह वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित-कोकिलाकाकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि ! नवीनां वीणां निनादय।

इस वसन्त में मधुर मञ्जरियों से पीली हो गयी सरस आम के वृक्षों की माला सुशोभित हो रही है। मनोहर काकली (बोली, कूक) वाली कोकिलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) माधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

यमुना के वेतस लताओं से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से पूरित वायु के मन्द मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता को देखकर, हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय-मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

मलयपवन से स्पृष्ट ललित पल्लवों वाले वृक्षों, पुष्पपुञ्जों तथा सुन्दर कुञ्जों पर काले भौंरों की गुञ्जार करती हुई पंक्ति को देखकर, हे वाणी नवीन वीणा को बजाओ।

तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलं सुमं चलेत् नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन हिल उठें, नदियों का मनोहर जल क्रीडा करता हुआ उछल पड़े। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

प्रस्तुत गीत के समानान्तर गीत-

वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।
वीणावादिनि वर दे

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि **पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला** के गीत की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी गई हैं, जिनमें सरस्वती से भारत के उत्कर्ष के लिये प्रार्थना की गई है। राष्ट्रकवि **मैथिलीशरणगुप्त** की रचना **"भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती"** भी ऐसे ही भावों से ओतप्रोत है।

पं. जानकीवल्लभ शास्त्री

पं॰ जानकी वल्लभ शास्त्री हिन्दी के छायावादी युग के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये संस्कृत के रचनाकार एवं उत्कृष्ट अध्येता रहे। बाल्यकाल में ही शास्त्री जी की काव्य रचना में प्रवृत्ति बन गई थी। अपनी किशोरावस्था में ही इन्हें संस्कृत कवि के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। उन्नीस वर्ष की उम्र में इनकी संस्कृत कविताओं का संग्रह **'काकली'** का प्रकाशन हुआ।

शास्त्री जी ने संस्कृत साहित्य में आधुनिक विधा की रचनाओं का प्रारंभ किया। इनके द्वारा गीत, गजल, श्लोक, आदि विधाओं में लिखी गई संस्कृत कविताएँ बहुत लोकप्रिय हुईं। इनकी संस्कृत कविताओं में संगीतात्मकता और लय की विशेषता ने लोगों पर अप्रतिम प्रभाव डाला।

द्वितीयः पाठः

स्वर्णकाकः

प्रस्तुत पाठ **श्री पद्मशास्त्री** द्वारा रचित **"विश्वकथाशतकम्"** नामक कथासंग्रह से लिया गया है, जिसमें विभिन्न देशों की सौ लोक कथाओं का संग्रह है। यह वर्मा देश की एक श्रेष्ठ कथा है, जिसमें लोभ और उसके दुष्परिणाम के साथ-साथ त्याग और उसके सुपरिणाम का वर्णन, एक सुनहले पंखों वाले कौवे के माध्यम से किया गया है।

पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान्निक्षिप्य पुत्रीमादिदेश - सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष। किञ्चित्कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तामुपाजगाम।

नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तां निवारयन्ती सा प्रार्थयत्-तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते। स्वर्णपक्षः काकः प्रोवाच, मा शुचः। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहिः पिप्पलवृक्षमनु त्वयागन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि। प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। वृक्षस्योपरि विलोक्य सा चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यत्तत्र स्वर्णमयः प्रासादो वर्तते। यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं हंहो

बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयमुत ताम्रमयं वा? कन्या प्रावोचत् अहं निर्धनमातुर्दुहिताऽस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि। परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्ण-भवनमाससाद।

चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। श्रान्तां तां विलोक्य काकः प्राह-पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम्-वद त्वं स्वर्णस्थाल्यां भोजनं करिष्यसि किं वा रजतस्थाल्यामुत ताम्रस्थाल्याम्? बालिका व्याजहार-ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि। तदा सा कन्या चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं परिवेषितम्। नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती। काको ब्रूते-बालिके! अहमिच्छामि यत्त्वं सर्वदा चात्रैव तिष्ठ परं तव माता वर्तते चैकाकिनी। त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।

इत्युक्त्वा काकः कक्षाभ्यन्तरात्तिस्रो मञ्जूषा निस्सार्य तां प्रत्यवदत्- बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्। लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितमियदेव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।

गृहमागत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता, तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सञ्जाता।

तस्मिन्नेव ग्रामे एकाऽपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। तस्या अपि एका पुत्री आसीत्। ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती। सूर्यातपे तण्डुलान्निक्षिप्य तयापि स्वसुता रक्षार्थं नियुक्ता। तथैव स्वर्णपक्षः काकः तण्डुलान् भक्षयन् तामपि तत्रैवाकारयत्। प्रातस्तत्र गत्वा सा काकं निर्भर्त्सयन्ती प्रावोचत्-भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ। काकोऽब्रवीत्-अहं त्वत्कृते सोपानमुत्तारयामि। तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयं ताम्रमयं वा। गर्वितया बालिकया प्रोक्तम्-स्वर्णमयेन सोपानेनाहमागच्छामि परं स्वर्णकाकस्तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्। स्वर्णकाकस्तां भोजनमपि ताम्रभाजने ह्यकारयत्।

प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकेन कक्षाभ्यन्तरात्तिस्रो मञ्जूषाः तत्पुरः समुत्क्षिप्ताः। लोभाविष्टा सा बृहत्तमां मञ्जूषाः गृहीतवती। गृहमागत्य सा तर्षिता यावद् मञ्जूषामुद्घाटयति तावत्तस्यां भीषणः कृष्णसर्पो विलोकितः। लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्। तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।

शब्दार्थाः

न्यवसत्	अवसत्	रहता था/रहती थी
दुहिता	सुता	पुत्री
स्थाल्याम्	स्थालीपात्रे	थाली में
खगेभ्यः	पक्षिभ्यः	पक्षियों से
समुड्डीय	उत्प्लुत्य	उड़कर
उपाजगाम	समीपम् आगतवान्	पास पहुँचा
स्वर्णपक्षः	स्वर्णमयः पक्षः	सोने का पंख
रजतचञ्चुः	रजतमयः चञ्चुः	चाँदी की चोंच
तण्डुलान्	अक्षतान्	चावलों को
निवारयन्ती	वारणं कुर्वन्ती	रोकती हुई
मा शुचः	शोकं मा कुरु	दुःख मत करो
प्रोवाच	अकथयत्	कहा
प्रहर्षिता	प्रसन्ना	खुश हुई
प्रासादः	भवनम्	महल
गवाक्षात्	वातायनात्	खिड़की से
सोपानम्	सोपानम्	सीढी
अवतारयामि	अवतीर्णं करोमि	उतारता हूँ
आससाद	प्राप्नोत्	पहुँचा
विलोक्य	दृष्ट्वा	देखकर
प्राह	उवाच	कहा
प्रातराशः	कल्यवर्तः	सुबह का नाश्ता
व्याजहार	अकथयत्	कहा
पर्यवेषितम्	पर्यवेषणं कृतम्	परोसा गया
महार्हाणि	बहुमूल्यानि	बहुमूल्य
लुब्धा	लोभवशीभूता	लोभी
निर्भर्त्सयन्ती	भर्त्सनां कुर्वन्ती	निन्दा करती हुई
पर्यत्यजत्	अत्यजत्	छोड़ दिया

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत्?
(ख) बालिकया पूर्वं किं न दृष्टम् आसीत्?
(ग) रुदन्तीं बालिकां काकः कथम् आश्वासयत्?
(घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता?
(ङ) बालिका केन सोपानेन स्वर्णभवनम् आससाद?
(च) सा ताम्रस्थाल्याः चयनाय किं तर्कं ददाति?
(छ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत् कीदृशं च प्राप्नोत्।

2. **(क) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत-**

(*i*) पश्चात् – .....
(*ii*) हसितुम् – .....
(*iii*) अधः – .....
(*iv*) श्वेतः – .....
(*v*) सूर्यास्तः – .....
(*vi*) सुप्तः – .....

(ख) सन्धिं कुरुत-

(*i*) नि + अवसत् – .....
(*ii*) सूर्य + उदयः – .....
(*iii*) वृक्षस्य + उपरि – .....
(*iv*) हि + अकारयत् – .....
(*v*) च + एकाकिनी – .....
(*vi*) इति + उक्त्वा – .....
(*vii*) प्रति + अवदत् – .....
(*viii*) प्र + उक्तम् – .....
(*ix*) अत्र + एव – .....
(*x*) तत्र + उपस्थिता – .....
(*xi*) यथा + इच्छम् – .....

3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) ग्रामे **निर्धना स्त्री** अवसत्।
(ख) **स्वर्णकाकं** निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्।
(ग) **सूर्योदयात्** पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता।
(घ) बालिका **निर्धनमातुः** दुहिता आसीत्।
(ङ) लुब्धा वृद्धा **स्वर्णकाकस्य** रहस्यमभिज्ञातवती।

4. **प्रकृति-प्रत्यय-संयोगं कुरुत (पाठात् चित्वा वा लिखत)-**

(क) हस् + शतृ – .....
(ख) भक्ष् + शतृ – .....
(ग) वि + लोकृ + ल्यप् – .....
(घ) नि + क्षिप् + ल्यप् – .....
(ङ) आ + गम् + ल्यप् – .....
(च) दृश् + क्त्वा – .....
(छ) शी + क्त्वा – .....
(ज) वृद्ध + टाप् – .....
(झ) सुत + टाप् – .....
(ञ) लघु + तमप् – .....

5. **प्रकृतिप्रत्यय-विभागं कुरुत-**

(क) हसन्तम् – .....
(ख) रोदितुम् – .....
(ग) वृद्धा – .....
(घ) भक्षयन् – .....
(ङ) दृष्ट्वा – .....
(च) विलोक्य – .....
(छ) निक्षिप्य – .....
(ज) आगत्य – .....
(झ) शयित्वा – .....
(ञ) सुता – .....
(ट) लघुतमम् – .....

6. **अधोलिखितानि कथनानि कः/का, कं/कां च कथयति-**

कथनानि	कः/का	कं/काम्
(क) पूर्वं प्रातराशः क्रियाताम्।	.....	.....
(ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।	.....	.....
(ग) तण्डुलान् मा भक्षय।	.....	.....
(घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।	.....	.....
(ङ) भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।	.....	.....

7. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु पञ्चमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

यथा- मूषकः **बिलाद्** बहिः निर्गच्छति। (बिल)

(क) जनः ..... बहिः आगच्छति। (ग्राम)

(ख) नद्यः ..... निस्सरन्ति। (पर्वत)

(ग) ..... पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)

(घ) बालकः ..... विभेति। (सिंह)

(ङ) ईश्वरः ..... त्रायते। (क्लेश)

(च) प्रभुः भक्तं ..... निवारयति। (पाप)

योग्यताविस्तारः

लेखक परिचय - इस कथा के लेखक पद्म शास्त्री हैं। ये साहित्यायुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, शिक्षाशास्त्री और रसियन डिप्लोमा आदि उपाधियों से भूषित हैं। इन्हें विद्याभूषण व आशुकवि मानद उपाधियाँ भी प्राप्त हैं। इन्हें सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार समिति और राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त है। इनकी अनेक रचनाएँ हैं, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

1. सिनेमाशतकम्
2. स्वराज्यम् खण्डकाव्यम्
3. लेनिनामृतम् महाकाव्यम्
4. मदीया सोवियत यात्रा
5. पद्यपञ्चतन्त्रम्
6. बङ्गलादेशविजयः
7. लोकतन्त्रविजयः
8. विश्वकथाशतकम्
9. चायशतकम्
10. महावीरचरितामृतम्

1. **भाषिक-विस्तार** - "किसी भी काम को करके" इस अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा- पठित्वा - पठ् + क्त्वा = पढ़कर

गत्वा - गम् + क्त्वा = जाकर

खादित्वा - खाद् + क्त्वा = खाकर

इसी अर्थ में अगर धातु (क्रिया) से पहले उपसर्ग होता है तो ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। धातु से पूर्व उपसर्ग होने की स्थिति में कभी भी 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हो सकता और उपसर्ग न होने की स्थिति में कभी भी ल्यप् प्रत्यय नहीं हो सकता है।

यथा- उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य

सम् + पूज् + ल्यप् = सम्पूज्य

वि + लोकृ (लोक) + ल्यप् = विलोक्य

आ + दा + ल्यप् = आदाय

निर् + गम् + ल्यप् = निर्गत्य

2. प्रश्नवाचक शब्दों को अनिश्चयवाचक बनाने के लिए चित् और चन निपातों का प्रयोग किया जाता है। ये निपात जब सर्वनामपदों के साथ लगते हैं तो सर्वनाम पद होते हैं और जब अव्यय पदों के साथ प्रयुक्त होते हैं तो अव्यय होते हैं।

यथा- कः = कौन

कः + चन = कश्चन = कोई	कः + चित् = कश्चित् = कोई
के + चन = केचन कोई (बहुवचन में)	के + चित् = केचित् (बहुवचन में)
का + चन = काचन (कोई स्त्री)	का + चित् = काचित् (कोई स्त्री)
काः + चन = काश्चन (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन)	काः + चित् = काश्चित् (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन में)

किम् शब्द के सभी वचनों, लिंगों व सभी विभक्तियों में चित् और चन का प्रयोग किया जा सकता है और उसे अनिश्चयवाचक बनाया जा सकता है। जैसे -

1.	किञ्चित्	प्रथमा में
2.	केनचित्	तृतीया में
3.	केषाञ्चित् (केषाम् + चित्)	षष्ठी में
4.	कस्मिंश्चित्	सप्तमी में
5.	कस्याञ्चित्	सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग में)

इसी तरह चित् के स्थान पर चन का प्रयोग होता है। चित् और चन जब अव्ययपदों में लग जाते हैं तो वे अव्यय हो जाते हैं। जैसे -

क्वचित्	क्वचन
कदाचित्	कदाचन

3. संस्कृत में एक से चतुर (चार) तक संख्यावाची शब्द पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुंसक लिङ्ग में अलग-अलग रूपों में होते हैं पर पञ्च (पाँच) से उनका रूप सभी लिङ्गों में एक सा होता है।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

4. वर्तमानकालिक क्रिया के अर्थ में धातु के साथ शतृ और शानच् प्रत्यय का प्रयोग होता है। शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं के साथ व शानच् प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं के साथ प्रयुक्त होते हैं।

यथा- खाद् + शतृ - खादन्/खादत्
गम् + शतृ - गच्छन्/गच्छत्
पठ् + शतृ - पठन्/पठत्
हस् + शतृ - हसन्/हसत्
सेव् + शानच् - सेवमानः
मुद् + शानच् - मोदमानः
लभ् + शानच् - लभमानः
ब्रु + शानच् -ब्रुवाणः

इनके रूप इस प्रकार चलते हैं-

पुंल्लिङ्ग

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु

स्त्रीलिङ्ग

गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः
गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
गच्छन्त्याः	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीनाम्
गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीषु

नपुंसक लिङ्ग में

गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति
गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति

शेष पुंल्लिङ्गवत्

5. तरप् और तपम् प्रत्ययों में तर और तम शेष बचता है।

यथा - बलवत् + तरप् - बलवत्तर
लघु + तमप् - लघुतम

ये तुलनावाची प्रत्यय हैं। इनके उदाहरण देखें -

लघु	लघुतर	लघुतम
महत्	महत्तर	महत्तम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

विश्वकथाशतकम् (भागद्वयम्, 1987, 1988 पद्म शास्त्री, देवनागर प्रकाशन, जयपुर)

तृतीयः पाठः

सोमप्रभम्

प्रस्तुत पाठ **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** द्वारा रचित **'प्रेक्षणसप्तकम्'** नामक नाट्य-संग्रह से सम्पादित कर लिया गया है। यहाँ दहेज प्रथा के निन्दनीय रूप का उल्लेख किया गया है। अपनी माता की रक्षा के लिए बालिका सोमप्रभा द्वारा किया गया प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(ततः प्रतिशति करतलाभ्यां चक्षुषी मार्जयन्ती पञ्चवर्षदेशीया बालिका सोमप्रभा)

विमला - अये जागरिता! त्वरस्व तावत्। परिहीयते विद्यालयगमनवेला।

सोमप्रभा - अम्ब! अद्य न गमिष्यामि विद्यालयम्।

विमला - *(हस्तेन सोमप्रभां गृहीत्वा)* अये किमेतत् कथयसि। विद्यालयस्तु गन्तव्य एव प्रतिदिनम्।

(सोमप्रभायाः प्रस्थानम्)

श्वश्रूः - विमले! अयि दुष्टे! कुत्र मृतासि? कियतः कालात् शब्दापयामि?

विमला - *(सकरुणं निशम्य)* इयं मम श्वश्रूः सदैव मर्मघातिभिः कटुवचनैराक्षिपति माम्। *(उच्चैः स्वरेण)* अम्ब! इयमागच्छामि। किं करणीयम्? *(परिक्रामति)*।

(ततः प्रविशति साटोपं कोपं निरूपयन्ती श्वश्रूः)

विमला - अम्ब! किमादिशसि?

श्वश्रूः - *(विडम्बयन्ती)* किमादिशसि? किमिदानीमपि महादेव्याः प्रभातकालो न सञ्जातः?

विमला - प्रातःकालिकं कार्यजातमेव सम्पादयामि।

श्वश्रूः - प्रातःकालिकं कार्यजातं सम्पादयसि। इदानीमपि चायपेयस्य नास्ति कापि कथा। तव पिता आगत्य साधयिष्यति किं चायं ... येन काकिणी अपि न दत्ता ...

विमला - मम पितृपादम् किमर्थं कदर्थयसि अम्ब! यत्किमपि कथनीयं मां प्रत्येव कथय।

श्वश्रूः - *(सभ्रूभङ्गं सभुजक्षेपं च)* *(अय् हय्)* शृणुत अस्याः दुष्टायाः अधरोत्तरम्। एतावानेव प्रियो यदि पिता तर्हि तत्रैव गत्वा कथं न मृता पितुर्गृहे ...?

विमला - स तु मां नेतुमागतः श्रावणे विगते। भवतीभिरेव ...

श्वश्रूः - अयि दुष्टे! वेतनस्य गर्वमुद्वहसि? अतिमात्रं गर्वितासि त्रिचतुरान् पणकानर्जयित्वा आनयसीत्येतेन। निष्ठीवनं करोमि तव पणकेषु। थुः! किं मन्यसे त्वम् अर्जयित्वा धनमानयसि? किं तव धनं तत्? तव पिता यावन्तं यौतकराशिं प्रतिज्ञातवान् तावतोऽर्धमेव समर्पितवान्।

विमला - अहो नृशंसता युष्माकम्। अहो लोलुपता ...

श्वश्रूः - अये! एतावत्तव साहसम् त्वं मामाक्षिपसि। नेत्रे दर्शयसि माम्।

(श्वसुरः प्रविश्य)

श्वसुरः - किं जातम्? कोऽयं कलहाडम्बरः प्रातः कालादेव? प्रातःकालिकं चायमपीदानीं यावन्न लब्धम् ...

श्वश्रूः - का कथा चायपानस्य। त्रोटितानि अनया दुष्टया चायभाजनानि। न मया किमपि भणितम्, तथापि अधिक्षिपति मामियम्। वयं नृशंसाः, वयं लोलुपाः, वयं राक्षसाः।

श्वसुरः - एतत्सर्वं कथितमनया?

विमला - न मयैतत् कथितं पितः!

श्वश्रूः - पश्यत पश्यत अस्या दौरात्म्यं दुर्भगायाः। किं किं दुष्कृत्यमियं न करोति? सम्मुखमेव प्रत्युत्तरमपि ददाति, जिह्वां चालयतीयं मत्समक्षम्।

श्वसुरः - *(सक्रोधम्)* अहो अस्या दुस्साहसम्!

(श्वसुरः श्वश्रूश्च तां न पश्यतः उभौ सक्रौर्यं सहिंस्रभावं विमलां निभालयन्तौ तामुपसर्पतः। सोमप्रभा प्रविश्य एतत् पश्यति)

विमला - अम्ब! पितः! न मया किमपि अपराद्धं सत्येन शपामि। किमिति यूयं मामेवं पश्यथ? नहि, नहि, न मां ताडयितुमर्हन्ति भवन्तः ... । *(उभौ जिघांसया बलाद् विमलां गृहीत्वा प्रधर्षयतः)*

सोमप्रभा - *(भयग्रस्तेनातिमन्दस्वरेण)* - अम्ब ... अम्ब ...

(श्वसुरौ तामपश्यन्तौ विमलां कर्षतः)

श्वश्रूः – नयतु एनां महानसम् इयं तत्रैव ज्वलतु।

(सोमप्रभा सहसा प्रधावन्ती निष्क्रामति। विमला आत्मत्राणाय सप्राणपणं प्रयतते, नेपथ्ये गीयते)

क्षणे क्षणे प्रवर्धते धनाय हिंस्रता खलै-
र्विलोप्यतेऽतिनिर्दयं च जन्तुभिर्मनुष्यता।
विभाजितं जगद्द्विधा निहन्यते च घातकै-
रतीव दैन्यमागतास्ति साधुता मनुष्यता।।

(विमलायास्तीव्रश्चीत्कारः। पुरुषनिरीक्षकेण सह सोमप्रभा प्रविशति)

पुरुषनिरीक्षकः – *(उपसृत्य)* हे! किं क्रियते, किं प्रचलत्यत्र? मुञ्चत एनाम्।

श्वश्रूः – *(सम्भ्रमम्)* महाभाग! न किमप्यत्याहितम्। इयमस्माकं साध्वी स्नुषा रुग्णा वर्तते। एनामुपचरामः।

निरीक्षकः – उपचारः क्रियते! युवयोरुपचारमहं करिष्ये। सर्वमहं जानामि। (*सोमप्रभां निर्दिश्य*) सर्वं निवेदितमनया बालिकया।

(*श्वश्रूः श्वसुरश्च विमलां मुञ्चतः*)

विमला – (*सकष्टं सोमप्रभामुपसृत्य*) – पुत्रि! त्वम् ... कथं त्वमिह ...

सोमप्रभा – अम्ब! मम उपानहौ त्रुटिते, त्रुटितौ, पुस्तकमञ्जूषा च त्रुटितेति अध्यापिका मां कक्षाया निष्कासितवती। त्वया उक्तमासीत् – विद्यालयाद् गृहमेव अविलम्बमागन्तव्यम्। अतोऽहं गृहमागता। (*रोदिति*)

विमला – मा रोदीः पुत्रि! सर्वमुपपन्नं भविष्यति।

सोमप्रभा – अत्रागत्य मया दृष्टं यत् पितामहः पितामही च त्वां मारयतः। अतोऽहं धावं धावं स्थानकं गता। पुरुष- निरीक्षकाय मया निवेदितम् ...

विमला – (*सवाष्पं सगद्गदं कण्ठमालिङ्ग्य सोमप्रभाम्*) त्वया अहं त्राता। महतः सङ्कटात् त्वं मामुद्धृतवती। प्रियं कृतं त्वया मे।

शब्दार्थाः

चक्षुषी	नेत्रे	दोनों आँखें
मार्जयन्ती	मार्जनं कुर्वन्ती	साफ करती हुई
त्वरस्व	शीघ्रतां कुरु	शीघ्रता करो
परिहीयते	विलम्बो भवति	देर हो रही है
श्वश्रूः		सास
श्वसुरः		श्वसुर
शब्दापयामि	आकारयामि	आवाज देती हूँ / देता हूँ
आक्षिपति	आक्षेपं करोति	ताना दे रही है
मर्मघातिभिः	मर्म हन्ति इति मर्मघाती तैः मर्मघातिभिः	मर्मभेदी (शब्दों से)
साटोपम्	गर्वेण सहितम्	गर्व दिखाती हुई
कोपम्	क्रोधम्	क्रोध को
कदर्थयसि	निन्दयसि	निन्दा करती हो
पणकान्		पैसे
निष्ठीवनम्	थूत्कृतम्	थूकना
यौतकराशिम्	कन्याशुल्कम्	दहेज की राशि
नृशंसता	निर्दयता	निर्दयता
लोलुपता	लोभप्रवृत्तिः	लोभ की प्रवृत्ति
त्रोटितानि	भञ्जितानि	तोड़ डाला गया
भाजनानि	पात्राणि	पात्र (बर्तन)
भणितम्	कथितम्	कहा गया
दौरात्म्यम्	दुष्टात्मत्वम्	दुष्टता
सक्रौर्यम्	सनृशंसत्वम्	क्रूरता के साथ
जिघांसया	हन्तुम् इच्छा जिघांसा तया जिघांसया	मारने की इच्छा से
निभालयन्तौ	पश्यन्तौ	देखते हुए (दो)
प्रधर्षयतः	संघट्टयतः	खींचते हैं
कर्षतः	प्रसह्य नयतः	बलपूर्वक ले जाते हैं
महानसम्	पाकशालाम्	रसोई घर में

खलैः	दुष्टैः	दुष्टों द्वारा
मुञ्चत	त्यजत	छोड़ो
अत्याहितम्	अहितम् अकरवम्	अहित किया
स्नुषा	पुत्रवधूः	बहू
रुग्णा	अस्वस्था	बीमार
उपानहौ	पदत्राणे	जूते (दो)
मञ्जूषा	पिटकम्	पेटी (बैग)
उपपन्नम्	उचितम्	सही, ठीक-ठाक
पितामहः	पितृजनकः	दादा
पितामही	पितृजननी	दादी
स्थानकम्	रक्षिस्थानम्	थाना

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) अध्यापिका सोमप्रभां कक्षायाः किमर्थं निष्कासितवती?

(ख) विद्यालयात् गृहम् आगत्य सा (सोमप्रभा) किम् अपश्यत्?

(ग) विमलायाः श्वसुरः श्वश्रूः च ताम् कुत्र किमर्थञ्च नयतः?

(घ) सोमप्रभा कथम् मातुः त्राणम् अकरोत्?

(ङ) सोमप्रभायाः आयुः कति वर्षाणि आसीत्?

(च) अस्मिन् नाटके पुरुषनिरीक्षकस्य (आरक्षिणः) कर्तव्यपरायणता वर्णिताऽस्ति भ्रष्टाचारपरायणता वा?

2. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-

क्षणे-क्षणे प्रवर्धते धनाय हिंस्रताखलै-
र्विलोप्यतेऽतिनिर्दयं च जन्तुभिर्मनुष्यता।
विभाजितं जगद्द्विधा निहन्यते च घातकै-
रतीव दैन्यमागताऽस्ति साधुता मनुष्यता।।

3. (क) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत-

(*i*) पुत्रवधू - .....

(*ii*) पदत्राणे - .....

(*iii*) पाकशालाम् – .....

(*iv*) शीघ्रं कुरु – .....

(*v*) पात्राणि – .....

(*vi*) हन्तुम् इच्छा – .....

(ख) सन्धिं कुरुत-

(*i*) कलह + आडम्बरः – .....

(*ii*) प्रचलति + अत्र – .....

(*iii*) न + अस्ति – .....

(*iv*) प्रति + एव – .....

(*v*) मया + एतत् – .....

(*vi*) तत्र + एव – .....

4. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययसंयोगं कुरुत-

यथा- आ + गम् + ल्यप् – आगत्य

सम् + पूज् + ल्यप् – सम्पूज्य

(क) अभि + गम् + ल्यप् – .....

(ख) वि + हा + ल्यप् – .....

(ग) निर् + गम् + ल्यप् – .....

(घ) वि + हस् + ल्यप् – .....

(ङ) प्र + क्लृप् (कृप्) + ल्यप् – .....

(च) सम् + बुध् + ल्यप् – .....

5. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गपदं चिनुत-

(क) परिहीयते – ..... (ख) सञ्जातः – .....

(ग) अधिक्षिपति – ..... (घ) प्रत्युत्तरम् – .....

(ङ) प्रवर्धते – ..... (च) विलोप्यते – .....

(छ) उपचरामः – ..... (ज) उद्धृतवती – .....

6. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) अद्य **विद्यालयम्** न गमिष्यामि।
(ख) **अनया दुष्टया** चायभाजनानि त्रोटितानि।
(ग) विमला **आत्मत्राणाय** प्रयतते।
(घ) त्वम् **सङ्कटात्** माम् उद्धृतवती।
(ङ) त्वम् **वेतनस्य** गर्वम् उद्वहसि।

7. **घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि पुनः लिखत -**

(क) सोमप्रभा आरक्षिणः समीपम् अगच्छत्।
(ख) विमलायाः श्वश्रूः तां कटुवचनैः आक्षिपति।
(ग) सा आत्मत्राणाय प्रयत्नं करोति।
(घ) विमलायाः श्वश्रूः श्वसुरः च तां ज्वालयितुं महानसं नयतः।
(ङ) पुरुषनिरीक्षकः सोमप्रभया सह आगच्छति तस्याः त्राणं करोति।

योग्यताविस्तारः

परिचय-अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में अनेक रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन करते हुए अन्याय, शोषण और दमन के प्रतिकार के लिए आह्वान कर रहे हैं। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार और नारी स्वातन्त्र्य के भाव का चित्रण **अभिराज राजेन्द्र मिश्र** के एकांकी नाटक **'वैधेयविक्रमम्'** में मिलता है जो उनके एकांकी संग्रह **'चतुष्पथीयम्'** में प्रकाशित है। **हरिदत्त शर्मा** का एकांकी **'वधूदहनम्'** (**त्रिपताकम्, 1987 में संकलित**) भी इसी समस्या पर केन्द्रित है। **राधावल्लभ त्रिपाठी** की **जनतालहरी, रोटिकालहरी** आदि काव्य तथा **प्रेक्षण- सप्तकम्** के अन्य एकांक इस दृष्टि से पठनीय हैं।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का जन्म 15 फरवरी 1949 ई. को मध्यप्रदेश के राजगढ़ जनपद में हुआ। आप डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य में आपका महनीय योगदान है।

भाषिकविस्तारः

शब्दापयामि - "आकारयामि" - बुलाता हूँ - इस अर्थ में शब्दापयामि शब्द आया है। हिन्दी में इसका बड़ा अच्छा प्रयोग है - 'आवाज देता हूँ।'

पितृपादम् - पा धातु में तृच् प्रत्यय जुड़ने से पिता शब्द बना। पाति-रक्षति इति पिता अर्थात् जो रक्षा करता है वह पिता है। आदर के लिए पादम् शब्द जोड़कर पितृपादम् शब्द बनता है जिसका अर्थ है पूज्य पिताजी।

नृशंसता - नृ + शस् + अण् - नृशंस शब्द बना और इसकी भाववाचक संज्ञा नृशंसता है। इसका अर्थ है निर्दयता - कठोरता, क्रूरता।

आत्मत्राणाय - अपने त्राण के लिए - अपने बचाव के लिए। त्रै + क्त और 'त' का नत्व/णत्व होने पर त्राणम् शब्द बनता है। आत्मनः त्राणाय - यहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास है।

निरीक्षकेण - निर् + ईक्ष् + ल्युट् में 'अ' करके निरीक्षक शब्द बनता है जिसका अर्थ है देखने वाला, विचार करने वाला, अवलोकन करने वाला। इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग होने पर निरीक्षकेण शब्द बना।

साध्वी - साधु शब्द में ङीप् प्रत्यय करके साध्वी शब्द निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है-सती स्त्री या पतिव्रता स्त्री।

उपचारः - 'उप' उपसर्ग पूर्वक चर् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर उपचारः शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है - सेवा - शुश्रूषा, सत्कार, चिकित्सा आदि।

निष्कासितवती - निस् उपसर्गपूर्वक 'कस् धातु से णिच् और क्तवतु प्रत्यय से निष्कासितवान् शब्द बना। स्त्रीलिङ्ग में यही निष्कासितवती हो गया।

साटोपम् - (सह आटोपेन) - घमंड में भरा हुआ या फूला हुआ। हेकड़ी के साथ, अकड़कर, इठलाकर या रोब के साथ जब आडम्बरपूर्वक कोई बात कही जाती है तो उसे साटोप कथन कहते हैं।

1. निम्नप्रकार के उदाहरण देखें, समझें व याद करें-

हन्तुम्	इच्छा	जिघांसा
पातुम्	इच्छा	पिपासा
भोक्तुम्	इच्छा	बुभुक्षा
ज्ञातुम्	इच्छा	जिज्ञासा
कर्तुम्	इच्छा	चिकीर्षा
श्रोतुम्	इच्छा	शुश्रूषा
द्रष्टुम्	इच्छा	दिदृक्षा

2. विशेषः-

- स्वभाषायां समानार्थकप्रयोगमन्विष्यत-जिह्वां चालयति।
- चायपेयस्य नास्ति काऽपि कथा।
- किमिदानीं महादेव्याः प्रभातकालो न सञ्जातः।
- अहो एतावांस्तव साहसः।

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

चतष्पथीयम्- अभिराज राजेन्द्रमिश्रः, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद।

चतुर्थः पाठः

कल्पतरुः

प्रस्तुत पाठ **'वेतालपञ्चविंशतिः'** नामक कथा संग्रह से लिया गया है, जिसमें मनोरञ्जक एवम् आश्चर्यजनक घटनाओं के माध्यम से जीवनमूल्यों का निरूपण किया गया है। इस कथा में जीमूतवाहन अपने पूर्वजों के काल से गृहोद्यान में आरोपित कल्पवृक्ष से सांसारिक द्रव्यों को न माँगकर संसार के प्राणियों के दुःखों को दूर करने का वरदान माँगता है क्योंकि धन तो पानी की लहर के समान चंचल है, केवल परोपकार ही इस संसार का सर्वोत्कृष्ट तथा चिरस्थायी तत्त्व है।

अस्ति हिमवान् नाम सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्रः। तस्य सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्। तत्र जीमूतकेतुरिति श्रीमान् विद्याधरपतिः वसति स्म। तस्य गृहोद्याने कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः। स राजा जीमूतकेतुः तं कल्पतरुम् आराध्य तत्प्रसादात् च बोधिसत्वांशसम्भवं जीमूतवाहनं नाम पुत्रं प्राप्नोत्। स महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च अभवत्। तस्य गुणैः प्रसन्नः स्वसचिवैश्च प्रेरितः राजा कालेन सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्येऽभिषिक्तवान्। यौवराज्ये स्थितः स जीमूतवाहनः कदाचित् हितैषिभिः पितृमन्त्रिभिः उक्तः - "युवराज! योऽयं सर्वकामदः कल्पतरुः तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्यः। अस्मिन् अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि नास्मान् बाधितुं शक्नुयात्" इति।

आकर्ण्यैतत् जीमूतवाहनः अन्तरचिन्तयत् - "अहो बत! ईदृशममरपादपं प्राप्यापि पूर्वैः पुरुषैरस्माकं तादृशं फलं किमपि नासादितं किन्तु केवलं कैश्चिदेव कृपणैः कश्चिदपि अर्थोऽर्थितः। तदहमस्मात् मनोरथमभीष्टं साधयामि" इति। एवमालोच्य स पितुरन्तिकमागच्छत्। आगत्य च सुखमासीनं पितरमेकान्ते न्यवेदयत्- "तात! त्वं तु जानासि एव यदस्मिन् संसारसागरे आशरीरमिदं सर्वं धनं वीचिवच्चञ्चलम्। एकः परोपकार एवास्मिन् संसारेऽनश्वरः यो युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते। तदस्माभिरीदृशः कल्पतरुः किमर्थं रक्ष्यते? यैश्च पूर्वैरयं 'मम मम' इति आग्रहेण रक्षितः, ते इदानीं कुत्र गताः? तेषां कस्यायम्? अस्य वा के ते? तस्मात् परोपकारैकफलसिद्धये त्वदाज्ञया इमं कल्पपादपम् आराधयामि।

अथ पित्रा 'तथा' इति अभ्यनुज्ञातः स जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य उवाच - "देव! त्वया अस्मत्पूर्वेषाम् अभीष्टाः कामाः पूरिताः, तन्ममैकं कामं पूरय। यथा पृथ्वीमदरिद्रां पश्यामि, तथा करोतु देव" इति। एवंवादिनि जीमूतवाहने "त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि" इति वाक् तस्मात् तरोरुदभूत्।

क्षणेन च स कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि तथा वसूनि अवर्षत् यथा न कोऽपि दुर्गत आसीत्। ततस्तस्य जीमूतवाहनस्य सर्वजीवानुकम्पया सर्वत्र यशः प्रथितम्।

शब्दार्थाः

अदरिद्राम्	दरिद्रहीनाम्	दरिद्रता से रहित अर्थात् सम्पन्न
हिमवान्	हिमालयः	हिमालय
नगेन्द्रः	पर्वतराजः	पर्वतों का राजा
सानोः	शिखरस्य	शिखर के, चोटी के
कुलक्रमागतः	कुलक्रमाद् आगतः कुलपरम्परया सम्प्राप्तः	कुल-परम्परा से प्राप्त हुआ
यौवराज्ये	युवराजपदे	युवराज के पद पर
शक्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अर्थितः	याचितः	माँगा
अन्तिकम्	समीपम्	पास में
वीचिवत्	तरङ्गवत्	तरङ्ग की तरह
अभ्यनुज्ञातः	अनुमतः	अनुमति पाया हुआ
अर्थिने	याचकाय	माँगने वाले के लिए, भिखारी के लिए
दिवम्	स्वर्गम्	स्वर्ग
वसूनि	धनानि	धन
उपगम्य	समीपं गत्वा	पास में जाकर
दुर्गतः	दुर्गतिम् आपन्नः	पीड़ित, निर्धन
सर्वजीवानुकम्पया	सर्वजीवेभ्यःकृपया	सभी जीवों के प्रति कृपा से
प्रथितम्	प्रसिद्धम्	प्रसिद्ध हो गया

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

   (क) कञ्चनपुरं नाम नगरं कुत्र विभाति स्म?

   (ख) जीमूतकेतुः किं विचार्य जीमूतवाहनं यौवराज्ये अभिषिक्तवान्?

   (ग) कल्पतरोः वैशिष्ट्यमाकर्ण्य जीमूतवाहनः किम् अचिन्तयत्?

   (घ) पाठानुसारं संसारेऽस्मिन् किं किं नश्वरम् किञ्च अनश्वरम्?

   (ङ) जीमूतवाहनस्य यशः सर्वत्र कथं प्रथितम्?

2. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(क) **तस्य** सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्।

(ख) राजा सम्प्राप्तयौवनं **तं** यौवराज्ये अभिषिक्तवान्?

(ग) **अयं** तव सदा पूज्यः।

(घ) तात! **त्वं** तु जानासि यत् धनं वीचिवच्चञ्चलम्।

3. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत -

(क) पर्वतः	–	....	(ख) भूपतिः	–	....
(ग) इन्द्रः	–	....	(घ) धनम्	–	....
(ङ) इच्छितम्	–	....	(च) समीपम्	–	....
(छ) धरित्रीम्	–	....	(ज) कल्याणम्	–	....
(झ) वाणी	–	....	(ञ) वृक्षः	–	....

4. 'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि। तानि समुचितं योजयत-

'क' स्तम्भ	'ख' स्तम्भ
कुलक्रमागतः	परोपकारः
दानवीरः	मन्त्रिभिः
हितैषिभिः	जीमूतवाहनः
वीचिवच्चञ्चलम्	कल्पतरुः
अनश्वरः	धनम्

5. (क) "स्वस्ति तुभ्यम्" स्वस्ति शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्तिः भवति। इत्यनेन नियमेन अत्र चतुर्थी विभक्तिः प्रयुक्ता। एवमेव (कोष्ठकगतेषु पदेषु) चतुर्थी विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(*i*) स्वस्ति .... (राजा)

(*ii*) स्वस्ति .... (प्रजा)

(*iii*) स्वस्ति .... (छात्र)

(*iv*) स्वस्ति .... (सर्वजन)

(ख) कोष्ठकगतेषु पदेषु षष्ठीं विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(*i*) तस्य .... उद्याने कल्पतरुः आसीत्। (गृह)

(*ii*) सः .... अन्तिकम् अगच्छत्। (पितृ)

(*iii*) ..... सर्वत्र यशः प्रथितम् (जीमूतवाहन)

(*iv*) अयं ..... तरुः? (किम्)

6. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) **तरोः** कृपया सः पुत्रम् अप्राप्नोत्।

(ख) सः **कल्पतरवे** न्यवेदयत्।

(ग) **धनवृष्ट्या** कोऽपि दरिद्रः नातिष्ठत्।

(घ) कल्पतरुः **पृथिव्यां** धनानि अवर्षत्।

(ङ) **जीवानुकम्पया** जीमूतवाहनस्य यशः प्रासरत्।

7. (क) यथास्थानं समासं विग्रहं च कुरुत-

(*i*) विद्याधराणां पतिः .....

(*ii*) ..... गृहोद्याने

(*iii*) नगानाम् इन्द्रः .....

(*iv*) ..... परोपकारः

(*v*) जीवानाम् अनुकम्पया .....

(ख) उदाहरणमनुसृत्य मतुप् (मत्, वत्) प्रत्ययप्रयोगं कृत्वा पदानि रचयत-

यथा- हिम + मतुप् = हिमवान्

श्री + मतुप् = श्रीमान्

(*i*) शक्ति + मतुप् = ...

(*ii*) धन + मतुप् = ...

(*iii*) बुद्धि + मतुप् = ...

(*iv*) धैर्य + मतुप् = ...

(*v*) गुण + मतुप् = ...

योग्यताविस्तारः

(क) ग्रन्थ परिचय - "वेतालपञ्चविंशतिका" पच्चीस कथाओं का संग्रह है। इस नाम की दो रचनाएँ पाई जाती हैं। एक शिवदास (13वीं शताब्दी) द्वारा लिखित ग्रन्थ है जिसमें गद्य और पद्य दोनों विधाओं का प्रयोग किया गया है। दूसरी जम्भलदत्त की रचना है जो केवल गद्यमयी है। इस कथा में कहा गया है कि राजा विक्रम को प्रतिवर्ष कोई तांत्रिक सोने का एक फल

देता है। उसी तांत्रिक के कहने पर राजा विक्रम श्मशान से शव लाता है। जिस पर सवार होकर एक वेताल मार्ग में राजा के मनोरञ्जन के लिए कथा सुनाता है। कथा सुनते समय राजा को मौन रहने का निर्देश देता है। कहानी के अन्त में वेताल राजा से कहानी पर आधारित एक प्रश्न पूछता है। राजा उसका सही उत्तर देता है। शर्त के अनुसार वेताल पुनः श्मशान पहुँच जाता है। इस तरह पच्चीस बार ऐसी ही घटनाओं की आवृत्ति होती है और वेताल राजा को एक-एक करके पच्चीस कथाएँ सुनाता है। ये कथाएँ अत्यन्त रोचक, भावप्रधान और विवेक की परीक्षा लेने वाली हैं।

(ख) क्त क्तवतु प्रयोगः-

क्त - इस प्रत्यय का प्रयोग सामान्यतः कर्मवाच्य में होता है।

क्तवतु - इस प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है।

क्त प्रत्ययः-

- जीमूतवाहनः हितैषिभिः मन्त्रिभिः **उक्तः**।
- कृपणैः कश्चिदपि अर्थः **अर्थितः**।
- त्वया अस्मत्कामाः **पूरिताः**।
- तस्य यशः **प्रथितम्** (कर्तृवाच्य में क्त)

क्तवतु प्रत्ययः-

- सा पुत्रं यौवराज्यपदेऽ**भिषिक्तवान्**।
- एतदाकर्ण्य जीमूतवाहनः **चिन्तितवान्**।
- स सुखासीनं पितरं **निवेदितवान्**।
- जीमूतवाहनः कल्पतरुम् **उक्तवान्**।

(ग) लोककल्याण-कामना-विषयक कतिपय श्लोक-

- सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
  सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
- सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
  सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।
- न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
  कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

अध्येतव्यः ग्रन्थः

वेतालपञ्चविंशतिकथा, अनुवादक, दामोदर झा, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1968

पञ्चमः पाठः

सूक्तिमौक्तिकम्

संस्कृत साहित्य में नीति-ग्रन्थों की समृद्ध परम्परा है। इनमें सारगर्भित और सरल रूप में नैतिक शिक्षाएँ दी गई हैं, जिनका उपयोग करके मनुष्य अपने जीवन को सफल और समृद्ध बना सकता है। ऐसे ही मनोहारी और बहुमूल्य सुभाषित यहाँ संकलित हैं, जिनमें सदाचरण की महत्ता, प्रियवाणी की आवश्यकता, परोपकारी पुरुष का स्वभाव, गुणार्जन की प्रेरणा, मित्रता का स्वरूप और उत्तम पुरुष के सम्पर्क से होने वाली शोभा की प्रशंसा और सत्संगति की महिमा आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

-मनुस्मृतिः

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

-विदुरनीतिः

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्माद् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

-चाणक्यनीतिः

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयः।।

-सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः।।

-मृच्छकटिकम्

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।

-नीतिशतकम्

यत्रापि कुत्रापि गता भवेयु-
र्हंसा महीमण्डलमण्डनाय।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां
येषां मरालैः सह विप्रयोगः।।

-भामिनीविलासः

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।

-हितोपदेशः

शब्दार्थाः

वित्तम्	धनम्	धन, ऐश्वर्य
वृत्तम्	आचरणम्	आचरण, चरित्र
अक्षीणः	न क्षीणः, सम्पन्नः	नष्ट न हुआ
धर्मसर्वस्वम्	कर्तव्यसारः	धर्म (कर्तव्यबोध) का सब कुछ
प्रतिकूलानि	विपरीतानि	अनुकूल नहीं
तुष्यन्ति	तोषम् अनुभवन्ति	सन्तुष्ट होते हैं
वक्तव्यम्	कथनीयम्	कहना चाहिए

वारिवाहाः	मेघाः	जल वहन करने वाले बादल
विभूतयः	समृद्धयः	सम्पत्तियाँ
गुणयुक्तः	गुणवान्, गुणसम्पन्नः	गुणों से युक्त
अगुणैः	गुणरहितैः	गुणहीनों से
आरम्भगुर्वी	आदौ दीर्घा	आरम्भ में लम्बी
क्षयिणी	क्षयशीला	घटती स्वभाव वाली
वृद्धिमती	वृद्धिम् उपगता	लम्बी होती हुई, लम्बी हुई
पूर्वाद्धपराद्धभिन्ना	पूर्वार्द्धेन परार्द्धेन च पृथग्भूता	पूर्वाह्ण और अपराह्ण (छाया) की तरह अलग-अलग
खलसज्जनानाम्	दुर्जनसुजनानाम्	दुष्टों और सज्जनों की
महीमण्डलमण्डनाय	पृथिवीमण्डलालङ्करणाय	पृथ्वी को सुशोभित करने के लिए
मरालैः	हंसैः	हंसों से
विप्रयोगः	वियोगः	अलग होना
गुणज्ञेषु	गुणज्ञातृषु जनेषु	गुणों को जानने वालों में
आस्वाद्यतोयाः	स्वादनीयजलसम्पन्नाः	स्वादयुक्त जल वाली
आसाद्य	प्राप्य	पाकर
अपेयाः	न पेयाः, न पानयोग्याः	न पीने योग्य

अभ्यासः

1. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**
   (क) यत्नेन किं रक्षेत् वित्तं वृत्तं वा?
   (ख) अस्माभिः (किं न समाचरेत्) कीदृशम् आचरणं न कर्त्तव्यम्?
   (ग) जन्तवः केन विधिना तुष्यन्ति?
   (घ) पुरुषैः किमर्थं प्रयत्नः कर्तव्यः?
   (ङ) सज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?
   (च) सरोवराणां हानिः कदा भवति?
   (छ) नद्याः जलं कदा अपेयं भवति?

2. 'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि, तानि यथोचितं योजयत-

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) आस्वाद्यतोयाः	(1) खलानां मैत्री
(ख) गुणयुक्तः	(2) सज्जनानां मैत्री
(ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना	(3) नद्यः
(घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना	(4) दरिद्रः

3. अधोलिखितयोः श्लोकद्वयोः आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-

(क) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।

(ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

4. अधोलिखितपदेभ्यः भिन्नप्रकृतिकं पदं चित्वा लिखत-

(क) वक्तव्यम्, कर्तव्यम्, सर्वस्वम्, हन्तव्यम्।
(ख) यत्नेन, वचने, प्रियवाक्यप्रदानेन, मरालेन।
(ग) श्रूयताम्, अवधार्यताम्, धनवताम्, क्षम्यताम्।
(घ) जन्तवः, नद्यः, विभूतयः, परितः।

5. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्नवाक्यनिर्माणं कुरुत-

(क) **वृत्ततः** क्षीणः हतः भवति।
(ख) **धर्मसर्वस्वं** श्रुत्वा अवधार्यताम्।
(ग) **वृक्षाः** फलं न खादन्ति।
(घ) **खलानाम्** मैत्री आरम्भगुर्वी भवति।

6. अधोलिखितानि वाक्यानि लोट्लकारे परिवर्तयत-

यथा- सः पाठं पठति।	-	सः पाठं पठतु।
(क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति।	-	.....
(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति।	-	.....
(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि।	-	.....

(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति। – .....

(ङ) अहं परोपकाराय कार्यं करोमि। – .....

7. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

यथा- तेषां **मरालैः** सह विप्रयोगः भवति। (मराल)

(क) ..... सह छात्रः शोधकार्यं करोति। (अध्यापक)

(ख) ..... सह पुत्रः आपणं गतवान्। (पितृ)

(ग) किं त्वम् ..... सह मन्दिरं गच्छसि? (मुनि)

(घ) बालः ..... सह खेलितुं गच्छति। (मित्र)

परियोजनाकार्यम्

(क) परोपकारविषयकं श्लोकद्वयम् अन्विष्य स्मृत्वा च कक्षायां सस्वरं पठ।

(ख) नद्याः एकं सुन्दरं चित्रं निर्माय संकलय्य वा वर्णयत यत् तस्याः तीरे मनुष्याः पशवः खगाश्च निर्विघ्नं जलं पिबन्ति।

योग्यताविस्तारः

संस्कृत-साहित्य में सारगर्भित, लौकिक, पारलौकिक एवं नैतिकमूल्यों वाले सुभाषितों की बहुलता है जो देखने में छोटे प्रतीत होते हैं किन्तु गम्भीर भाव वाले होते हैं। मानव-जीवन में इनका अतीव महत्त्व है।

भावविस्तारः

(क) **आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।**

खारे समुद्र में मिलने पर स्वादिष्ट जलवाली नदियों का जल अपेय हो जाता है। इसी भावसाम्य के आधार पर कहा गया है कि **"संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।"**

(ख) **छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।**

दुष्ट व्यक्ति मित्रता करता है और सज्जन व्यक्ति भी मित्रता करता है। परन्तु दोनों की मैत्री, दिन के पूर्वार्द्ध एवं परार्द्ध कालीन छाया की भाँति होती है, वास्तव में दुष्ट व्यक्ति की मैत्री के लिए श्लोक का प्रथम चरण **"आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण"** कहा गया है तथा सज्जन की मैत्री के लिए द्वितीय चरण **'लघ्वीपुरा वृद्धिमती च पश्चात्'** कहा गया है।

भाषिकविस्तारः

(1) **वित्ततः** - वित्त शब्द से तसिल् प्रत्यय किया गया है। पंचमी विभक्ति के अर्थ में लगने वाले तसिल् प्रत्यय का तः ही शेष रहता है। उदाहरणार्थ- सागर + तसिल् = सागरतः, प्रयाग + तसिल् = प्रयागतः, देहली + तसिल् = देहलीतः आदि। इसी प्रकार **वृत्ततः** शब्द में भी तसिल् प्रत्यय लगा करके वृत्ततः शब्द बनाया गया है।

समाचरेत् - सम् + आङ् + √चर् + विधिलिङ् + प्रथमपुरुष + एकवचन

तुष्यन्ति - √तुष् + लट्लकार + प्रथमपुरुष + बहुवचन

संरक्षेत् - सम् + √रक्ष् + विधिलिङ् + प्रथमपुरुष + एकवचन

हतः - √हन् + क्त प्रत्यय (पुंल्लिङ्ग प्र.वि.ए.व.)

(2) **उपसर्ग** - क्रिया के पूर्व जुड़ने वाले प्र, परा आदि शब्दों को उपसर्ग कहा जाता है। इन उपसर्गों के जुड़ने से क्रिया के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

जैसे- 'हृ' धातु से उपसर्गों का योग होने पर निम्नलिखित रूप बनते हैं

प्र + हृ - प्रहरति, प्रहार (हमला करना)
वि + हृ - विहरति, विहार (भ्रमण करना)
उप + हृ - उपहरति, उपहार (भेंट देना)
सम् + हृ - संहरति, संहार (मारना)

(3) शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में परिवर्तित करने के लिए स्त्री प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इन प्रत्ययों में टाप् व ङीप् मुख्य हैं।

जैसे- बाल + टाप् - बाला
अध्यापक + टाप् - अध्यापिका
लघु + ङीप् - लघ्वी
गुरु + ङीप् - गुर्वी
साधु + ङीप् - साध्वी

षष्ठः पाठः

भ्रान्तो बालः

प्रस्तुत पाठ **'संस्कृत प्रौढपाठावलिः'** नामक ग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल-कूद में लगा रहता है। यहाँ तक कि वह खेलने के लिए पशु-पक्षियों तक का आवाहन (आह्वान) करता है किन्तु कोई उसके साथ खेलने के लिए तैयार नहीं होता। इससे वह बहुत निराश होता है। अन्ततः उसे बोध होता है कि सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। केवल वही बिना किसी काम के इधर-उधर घूमता रहता है। वह निश्चय करता है कि अब व्यर्थ में समय गँवाना छोड़कर अपना कार्य करेगा।

भ्रान्तः कश्चन बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम। किन्तु तेन सह केलिभिः कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान आसीत्। यतस्ते सर्वेऽपि पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणा बभूवुः। तन्द्रालुर्बालो लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन्नेकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।

स चिन्तयामास-विरमन्त्वेते वराकाः पुस्तकदासाः। अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि। ननु भूयो द्रक्ष्यामि क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखम्। सन्त्वेते निष्कुटवासिन एव प्राणिनो मम वयस्या इति।

अथ स पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत्। स द्विस्त्रिरस्याह्वानमेव न मानयामास। ततो भूयो भूयः हठमाचरति बाले सोऽगायत्-वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा इति।

तदा स बालः 'कृतमनेन मिथ्यागर्वितेन कीटेन' इत्यन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकमेकं चञ्च्वा तृणशलाकादिकमाददानमपश्यत्। उवाच च-"अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि। एहि क्रीडावः। त्यज शुष्कमेतत् तृणं स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि" इति। स तु 'नीडः कार्यो बटद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण' इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रो बभूव।

तदा खिन्नो बालकः एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति। तदन्वेषयाम्यपरं मानुषोचितं विनोदयितारमिति परिक्रम्य पलायमानं कमपि श्वानमवालोकयत्। प्रीतो बालस्तमित्थं

संबोधयामास – रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि अस्मिन् निदाघदिवसे? आश्रयस्वेदं प्रच्छायशीतलं तरुमूलम्। अहमपि क्रीडासहायं त्वामेवानुरूपं पश्यामीति। कुक्कुरः प्रत्याह–

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।। इति।

सर्वैरेवं निषिद्धः स बालो विघ्नितमनोरथः सन्–'कथमस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व-स्वकृत्ये निमग्नो भवति। न कोऽप्यहमिव वृथा कालक्षेपं सहते। नम एतेभ्यः यैर्मे तन्द्रालुतायां कुत्सा समापादिता। अथ स्वोचितमहमपि करोमि इति विचार्य त्वरितं पाठशालामुपजगाम।

ततः प्रभृति स विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषीं प्रथां सम्पदं च लेभे।

शब्दार्थाः

भ्रान्तः	भ्रमयुक्तः	भ्रमित
क्रीडितुम्	खेलितुम्	खेलने के लिए
निर्जगाम	निष्क्रान्तः	निकल गया
केलिभिः	क्रीडाभिः	खेल द्वारा
कालं क्षेप्तुम्	समयं यापयितुम्	समय बिताने के लिए
त्वरमाणाः	त्वरां कुर्वन्तः, त्वरयन्तः	शीघ्रता करते हुए
तन्द्रालुः	अलसः, अक्रियः	आलसी
दृष्टिपथम्	दृष्टिम्	निगाह
चिन्तयामास	अचिन्तयत्	सोचा
पुस्तकदासाः	पुस्तकानां दासाः	पुस्तकों के गुलाम
उपाध्यायस्य	आचार्यस्य	गुरु के
निष्कुटवासिनः	वृक्षकोटरनिवासिनः	वृक्ष के कोटर में रहने वाले
क्रीडाहेतोः	केलिनिमित्तम्	खेलने के निमित्त
आह्वानम्	आमन्त्रणम्	बुलावा
हठमाचरति	आग्रहपूर्वकं व्यवहारं कुर्वति सति	हठ करने पर
मधुसंग्रहव्यग्राः	पुष्परससंकलनतत्पराः	पुष्प के रस के संग्रह में लगे हुए
भूयो भूयः	पुनः पुनः	बार-बार
मिथ्यागर्वितेन	व्यर्थाहङ्कारयुक्तेन	झूठे गर्व वाले
चटकम्	पक्षी	चिड़िया
चञ्च्वा	चञ्चुपुटेन	चोंच से
आददानम्	गृह्णन्तम्	ग्रहण करते हुए को
स्वादूनि	स्वादिष्टानि	स्वादयुक्त
भक्ष्यकवलानि	भक्षणीयग्रासाः	खाने के लिए उपयुक्त कौर
स्वकर्मव्यग्रः	स्वकीयकार्येषु तत्परः	अपने कार्यों में संलग्न
अन्वेषयामि	अन्वेषणं करोमि	खोजता हूँ
विनोदयितारम्	मनोरञ्जनकारिणम्	मनोरंजन करने वाले को
पलायमानम्	धावन्तम्	भागते हुए

अवलोकयत्	अपश्यत्	देखा
बटद्रुशाखायां	वटवृक्षस्य शाखायां	बरगद के पेड़ की शाखा पर
संबोधयामास	संबोधितवान्	संबोधित किया
निदाघदिवसे	ग्रीष्मदिने	गर्मी के दिन में
केलीसहायम्	क्रीडासहायकम्	खेल में सहयोगी
अनुरूपम्	योग्यम्	उपयुक्त
कुक्कुरः	श्वा	कुत्ता
रक्षानियोगकरणात्	सुरक्षाकार्यवशात्	रक्षा के कार्य में लगे होने से
भ्रष्टव्यम्	पतितव्यम्	हटना चाहिए
ईषदपि	अल्पमात्राम् अपि	थोड़ा-सा भी
निषिद्धः	अस्वीकृतः	मना किया गया
विघ्नितमनोरथः	खण्डितकामः	टूटी इच्छाओं वाला
कालक्षेपम्	समयस्य यापनम्	समय बिताना
तन्द्रालुतायाम्	तन्द्रालुजनस्य भावे, अलसत्वे	आलस्य में
कुत्सा	घृणा, भर्त्सना	घृणाभाव
विद्याव्यसनी	अध्ययनरतः	विद्या में रत रहने वाला
प्रथाम्	प्रसिद्धिम्	ख्याति, प्रसिद्धि

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) बालः कदा क्रीडितुं निर्जगाम?

(ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा बभूवुः?

(ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन न अमन्यत?

(घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत्?

(ङ) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान्?

(च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत्?

(छ) विघ्नितमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत्?

2. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि॥

3. "भ्रान्तो बालः" इति कथायाः सारांशं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।

4. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) **स्वादूनि** भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।
(ख) चटकः **स्वकर्मणि** व्यग्रः आसीत्।
(ग) कुक्कुरः **मानुषाणां** मित्रम् अस्ति।
(घ) स **महतीं वैदुषीं** लब्धवान्।
(ङ) **रक्षानियोगकरणात्** मया न भ्रष्टव्यम् इति।

5. "एतेभ्यः नमः" - इति उदाहरणमनुसृत्य नमः इत्यस्य योगे चतुर्थी विभक्तेः प्रयोगं कृत्वा पञ्चवाक्यानि रचयत।

6. 'क' स्तम्भे समस्तपदानि 'ख' स्तम्भे च तेषां विग्रहः दत्तानि, तानि यथासमक्षं लिखत-

'क' स्तम्भ	'ख' स्तम्भ
(क) दृष्टिपथम्	(1) पुष्पाणाम् उद्यानम्
(ख) पुस्तकदासाः	(2) विद्यायाः व्यसनी
(ग) विद्याव्यसनी	(3) दृष्टेः पन्थाः
(घ) पुष्पोद्यानम्	(4) पुस्तकानां दासाः

7. (क) अधोलिखितेषु पदयुग्मेषु एकं विशेष्यपदम् अपरञ्च विशेषणपदम्। विशेषणपदम् विशेष्यपदं च पृथक्-पृथक् चित्वा लिखत-

		विशेषणम्	विशेष्यम्
(*i*) खिन्नः बालः	-	.....	.....
(*ii*) पलायमानं श्वानम्	-	.....	.....
(*iii*) प्रीतः बालकः	-	.....	.....
(*iv*) स्वादूनि भक्ष्यकवलानि	-	.....	.....
(*v*) त्वरमाणाः वयस्याः	-	.....	.....

(ख) कोष्ठकगतेषु पदेषु सप्तमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

(*i*) बालः ..... क्रीडितुं निर्जगाम। (पाठशालागमनवेला)

(*ii*) ..... जगति प्रत्येकं स्वकृत्ये निमग्नो भवति। (इदम्)

(*iii*) खगः ..... नीडं करोति। (शाखा)

(*iv*) अस्मिन् ..... किमर्थं पर्यटसि? (निदाघदिवस)

(*v*) ..... हिमालयः उच्चतमः। (नग)

परियोजनाकार्यम्

(क) एकस्मिन् स्फोरकपत्रे (chart-paper) एकस्य उद्यानस्य चित्रं निर्माय संकलय्य वा पञ्चवाक्येषु तस्य वर्णनं कुरुत।

(ख) "परिश्रमस्य महत्त्वम्" इति विषये हिन्दी भाषया आङ्ग्लभाषया वा पञ्चवाक्यानि लिखत।

भाषिकविस्तारः

(1) क्रिया के निम्नलिखित रूपों को ध्यानपूर्वक देखें समझें व अभ्यास करें-

पठति (पढ़ता/पढ़ती है) पाठयति (पढ़ाता/पढ़ाती है) पाठयामास (पढ़ाया)

यथा- सः पुस्तकं **पठति**।

शिक्षकः छात्रान् **पाठयति**।

आचार्यः वेदान् **पाठयामास**।

इसी प्रकार कुछ अन्य रूप भी प्रस्तुत हैं-

बोधति	बोधयति	बोधयामास
करोति	कारयति	कारयामास
लिखति	लेखयति	लेखयामास
गच्छति	गमयति	गमयामास
हसति	हासयति	हासयामास
शृणोति	श्रावयति	श्रावयामास
धावति	धावयति	धावयामास
गृह्णाति	ग्राहयति	ग्राहयामास
ददाति	दापयति	दापयामास

हरति	हारयति	हारयामास
नयति	नाययति	नाययामास

(2) **यस्य च भावेन भावलक्षणम्**-जहाँ एक क्रिया के होने से दूसरी क्रिया के होने का ज्ञान हो तो पहली क्रिया के कर्त्ता में सप्तमी विभक्ति होती है। इसे 'सति सप्तमी' या 'भावे सप्तमी' भी कहते हैं।

यथा- **उदिते सवितरि** कमलं विकसति।

गर्जति मेघे मयूरः अनृत्यत्।

नृत्यति शिवे नृत्यन्ति शिवगणाः।

हठमाचरति बाले भ्रमरः अगायत्।

उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।

(3) **अन्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः**-जिस समास में पूर्व और उत्तर पदों से भिन्न किसी अन्य पद के अर्थ का प्राधान्य होता है वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

यथा- **पीताम्बरः** - पीतम् अम्बरं यस्य सः (विष्णुः)।

नीलकण्ठः - नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)।

अनुचिन्तितपूर्वदिनपाठाः - अनुचिन्तिताः पूर्वदिनस्य पाठाः यैः ते।

विघ्नितमनोरथः - विघ्नितः मनोरथः यस्य सः।

दत्तदृष्टिः - दत्ता दृष्टिः येन सः।

सप्तमः पाठः

प्रत्यभिज्ञानम्

प्रस्तुत पाठ भासरचित **'पञ्चरात्रम्'** नामक नाटक से सम्पादित कर लिया गया है। दुर्योधन आदि कौरव वीरों ने राजा विराट की गायों का अपहरण कर लिया। विराट-पुत्र उत्तर बृहन्नला (छद्मवेषी अर्जुन) को सारथी बनाकर कौरवों से युद्ध करने जाता है। कौरवों की ओर से अभिमन्यु (अर्जुन-पुत्र) भी युद्ध करता है। युद्ध में कौरवों की पराजय होती है। इसी बीच विराट को सूचना मिलती है, वल्लभ (छद्मवेषी भीम) ने रणभूमि में अभिमन्यु को पकड़ लिया है। अभिमन्यु भीम तथा अर्जुन को नहीं पहचान पाता और उनसे उग्रतापूर्वक बातचीत करता है। दोनों अभिमन्यु को महाराज विराट के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। अभिमन्यु उन्हें प्रणाम नहीं करता। उसी समय राजकुमार उत्तर वहाँ पहुँचता है जिसके रहस्योद्घाटन से अर्जुन तथा भीम आदि पाण्डवों के छद्मवेष का उद्घाटन हो जाता है।

भटः – जयतु महाराजः।

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केनासि विस्मितः?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं
सौभद्रो ग्रहणं गतः।।

राजा – कथमिदानीं गृहीतः?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं
बाहुभ्यामवतारितः।
(*प्रकाशम्*) इत इतः
कुमारः।

अभिमन्युः – भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अये! अयमपरः कः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।

बृहन्नला – आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्। वाचालयत्वेनमार्यः।

भीमसेनः – (*अपवार्य*) बाढम् (*प्रकाशम्*) अभिमन्यो!

अभिमन्युः – अभिमन्युर्नाम?

भीमसेनः – रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला – अभिमन्यो!

अभिमन्युः – कथं कथम्। अभिमन्युर्नामाहम्। भोः! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते अथवा अहं शत्रुवशं गतः। अतएव तिरस्क्रियते।

बृहन्नला – अभिमन्यो! सुखमास्ते ते जननी?

अभिमन्युः – कथं कथम्? जननी नाम? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे?

बृहन्नला – अभिमन्यो! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः?

अभिमन्युः – कथं कथम्? तत्रभवन्तमपि नाम्ना। अथ किम् अथ किम्?

(*उभौ परस्परमवलोकयतः*)

अभिमन्युः – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।

पार्थं पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम्।
तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः॥

अभिमन्युः – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन! अस्माकं कुले आत्मस्तवं कर्तुमनुचितम्। रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य, मदृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम्। किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः?

अभिमन्युः – अशस्त्रं मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति। अतः अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः। एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्युः – आः। कस्य महाराजः?

राजा – एह्येहि पुत्र! कथं न मामभिवादयसि? (*आत्मगतम्*) अहो! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। (*प्रकाशम्*) अथ केनायं गृहीतः?

भीमसेनः – महाराज! मया।

अभिमन्युः – अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।

भीमसेनः – शान्तं पापम्। धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते। मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।

अभिमन्युः – मा तावद् भोः! किं भवान् मध्यमः तातः यः तस्य सदृशं वचः वदति।

भगवान् – पुत्र! कोऽयं मध्यमो नाम?

अभिमन्युः – योक्त्रयित्वा जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना।
असह्यं कर्म तत् कृत्वा नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्।।

राजा – न ते क्षेपेण रुष्यामि, रुष्यता भवता रमे।
किमुक्त्वा नापराद्धोऽहं, कथं तिष्ठति यात्विति।।

अभिमन्युः – यद्यहमनुग्राह्यः –
पादयोः समुदाचारः क्रियतां निग्रहोचितः।
बाहुभ्यामाहृतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।।
(*ततः प्रविशत्युत्तरः*)

उत्तरः – तात! अभिवादये!

राजा – आयुष्मान् भव पुत्र। पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।

उत्तरः – पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

राजा – पुत्र! कस्मै?

उत्तरः – इहात्रभवते धनञ्जयाय।

राजा – कथं धनञ्जयायेति?

उत्तरः – अथ किम्
श्मशानाद्धनुरादाय तूणीराक्षयसायके।
नृपा भीष्मादयो भग्ना वयं च परिरक्षिताः।।

राजा - एवमेतत्।

उत्तरः - व्यपनयतु भवाञ्छङ्काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।

बृहन्नला - यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।

अभिमन्युः - इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु ...

न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम्।
दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः।।

(इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति।)

शब्दार्थाः

प्रत्यभिज्ञानम्	पुनः ज्ञानम्, संस्कार-जन्यं ज्ञानम्, पुनः स्मृतिः	पहचान
अपूर्वः	अविद्यमान् पूर्वः	जो पहले न हुआ हो
अश्रद्धेयम्	न श्रद्धेयम्	श्रद्धा के अयोग्य
सौभद्रः	सुभद्रायाः पुत्रः, अभिमन्युः	अभिमन्यु
आसाद्य	प्राप्य	पाकर, पहुँचकर
निश्शङ्कम्	शङ्कया रहितम्	बिना किसी हिचक के
भुजैकनियन्त्रितः	एकेन एव बाहुना संयतः	एक ही हाथ से पकड़ा गया
विभाति	शोभते	सुशोभित होता है
कौतूहलम्	जिज्ञासा	जानने की उत्कण्ठा
अपवार्य	दूरीकृत्य	हटाकर
रुष्यति	क्रुद्धः भवति	क्रोधित होता है
वाचालयतु	वक्तुं प्रेरयतु	बोलने को प्रेरित करें
तिरस्क्रियते	उपेक्ष्यते	उपेक्षा की जाती है
पितृव्यः	पितुःभ्राता	चाचा
अवलोकयतः	पश्यतः	देखते हैं (द्विवचन)
सावज्ञम्	अपमानेन सहितम्	उपेक्षा करते हुए
वाक्शौण्डीर्यम्	वाचिकं वीरत्वम्	वाणी की वीरता
पदातिः	पादाभ्याम् अतति	पैदल चलने वाला
उपसर्पतु	समीपं गच्छतु	पास जाओ
एहि	आगच्छ	आओ
उत्सिक्तः	गर्वोद्धतः, अहङ्कारी	गर्व से युक्त
दर्प-प्रशमनम्	गर्वस्य शमनम्	घमंड को शान्त करना
गृहीतः	ग्रहणे कृतः	पकड़ा गया
प्रहरणम्	शस्त्रम्	हथियार
योक्त्रयित्वा	बद्ध्वा	बाँधकर
क्षेपेण	निन्दावचनेन	निन्दा से
रमे (√ रम्)	प्रीतो भवामि	प्रसन्न होता हूँ

यातु	गच्छतु	जाओ
समुदाचारः	शिष्टाचारः	सभ्य आचरण
अनुग्राह्यः	अनुग्रहस्य योग्यम्	कृपा के योग्य
निग्रहोचितम्	बन्धनोचित	उचित दण्ड
तूणीर	बाणकोशः	तरकस
व्यपनयतु	दूरीकरोतु	दूर करें
क्षिप्ताः	व्यङ्ग्येन सम्बोधिताः	आक्षेप किये जाने पर
दिष्ट्या	भाग्येन	भाग्य से
गोग्रहणम्	धेनूनाम् अपहरणम्	गायों का अपहरण
स्वन्तम् (सु + अन्तम्)	सुखान्तम्	सुखान्त

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) भटः कस्य ग्रहणम् अकरोत्?

(ख) अभिमन्युः कथं गृहीतः आसीत्?

(ग) भीमसेनेन बृहन्नलया च पृष्टः अभिमन्युः किमर्थम् उत्तरं न ददाति?

(घ) अभिमन्युः स्वग्रहणे किमर्थम् वञ्चितः इव अनुभवति?

(ङ) कस्मात् कारणात् अभिमन्युः गोग्रहणं सुखान्तं मन्यते?

2. अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत-

(क) भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि। (विस्मयः, भयम्, जिज्ञासा)

(ख) कथं कथं! अभिमन्युर्नामाहम्। (आत्मप्रशंसा, स्वाभिमानः, दैन्यम्)

(ग) कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे? (लज्जा, क्रोधः, प्रसन्नता)

(घ) धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते मम तु भुजौ एव प्रहरणम्। (अन्धविश्वासः, शौर्यम्, उत्साहः)

(ङ) बाहुभ्यामाहृतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति। (आत्मविश्वासः, निराशा, वाक्संयमः)

(च) दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः। (क्षमा, हर्षः, धैर्यम्)

3. यथास्थानं रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

(क) खलु + एषः = ...

(ख) बल + ... + अपि = बलाधिकेनापि

(ग) विभाति + ... = बिभात्युमावेषम्
(घ) ..... + एनम् = वाचालयत्वेनम्
(ङ) रुष्यति + एष = रुष्यत्येष
(च) त्वमेव + एनम् = ...
(छ) यातु + ... = यात्विति
(ज) ..... + इति = धनञ्जयायेति

4. अधोलिखितानि वचनानि कः कं प्रति कथयति-

यथा -	**कः**	**कं प्रति**
आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्	बृहन्नला	भीमसेनम्
(क) कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते	.....	.....
(ख) अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्	.....	.....
(ग) पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा	.....	.....
(घ) पुत्र! कोऽयं मध्यमो नाम	.....	.....
(ङ) शान्तं पापम्! धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते	.....	.....

5. अधोलिखितानि स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि-

(क) वाचालयतु **एनम्** आर्यः।
(ख) किमर्थं **तेन** पदातिना गृहीतः।
(ग) कथं न **याम्** अभिवादयसि।
(घ) **मम** तु भुजौ एव प्रहरणम्।
(ङ) अपूर्व इव ते **हर्षो** ब्रूहि केन विस्मितः?

6. श्लोकानाम् अपूर्णः अन्वयः अधोदत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) पार्थं पितरं मातुलं ..... च उद्दिश्य कृतास्त्रस्य तरुणस्य ..... युक्तः।
(ख) कण्ठश्लिष्टेन ..... जरासन्धं योक्त्रयित्वा तत् असह्यं ..... कृत्वा (भीमेन) कृष्णः अतदर्हतां नीतः।
(ग) रुष्यता ..... रमे। ते क्षपेण न रुष्यामि, किं ..... अहं नापराद्धः, कथं (भवान्) तिष्ठति, यातु इति।
(घ) पादयोः निग्रहोचितः समुदाचारः ..... । बाहुभ्याम् आहृतम् (माम्) ..... बाहुभ्याम् एव नेष्यति।

7. (क) अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् विचित्य लिखत-

पदानि		उपसर्गः
यथा-आसाद्य		आ
(*i*) अवतारितः	–	.....
(*ii*) विभाति	–	.....
(*iii*) अभिभाषय	–	.....
(*iv*) उद्भूताः	–	.....
(*v*) तिरस्क्रियते	–	.....
(*vi*) प्रहरन्ति	–	.....
(*vii*) उपसर्पतु	–	.....
(*viii*) परिरक्षिताः	–	.....
(*ix*) प्रणमति	–	.....

(ख) **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकदत्तपदेषु पञ्चमीविभक्तिं प्रयुज्य वाक्यानि पूरयत-**

यथा- श्मशानाद् धनुगदाय अर्जुनः आगतः। (श्मशान)

(*i*) पाठान् पठित्वा सः ..... आगतः। (विद्यालय)

(*ii*) ..... पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)

(*iii*) गङ्गा ..... निर्गच्छति। (हिमालय)

(*iv*) क्षमा ..... फलानि आनयति। (आपण)

(*v*) ..... बुद्धिनाशो भवति। (स्मृतिनाश)

योग्यताविस्तारः

कवि परिचयास'' का नाम अग्रगण्य है। भास रचित तेरह रूपक निम्नलिखित हैं-

• दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, उरुभङ्गम्, मध्यमव्यायोगः, पञ्चरात्रम्, अभिषेकनाटकम्, बालचरितम्, अविमारकम्, प्रतिमानाटकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम् तथा चारुदत्तम्।

ग्रन्थ परिचय

पञ्चरात्रम् की कथावस्तु महाभारत के विराट पर्व पर आधारित है। पाण्डवों के अज्ञातवास के समय दुर्योधन एक यज्ञ करता है और यज्ञ की समाप्ति पर आचार्य द्रोण को गुरुदक्षिणा देना चाहता है। द्रोण गुरुदक्षिणा के रूप में पाण्डवों का राज्याधिकार चाहते हैं। दुर्योधन कहता है कि यदि गुरु द्रोणाचार्य

पाँच रातों में पाण्डवों का पता लगा दें तो उनकी पैतृक सम्पत्ति का भाग उन्हें दिया जा सकता है। इसी आधार पर इस नाटक का नाम 'पञ्चरात्रम्' है।

भावविस्तारः

तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः

अज्ञातवास में बृहन्नला के रूप में अर्जुन को बहुत समय के बाद पुत्र-मिलन का अवसर प्राप्त हुआ। वह अपने पुत्र से बात करना चाहता है परन्तु (अपने अपहरण से) क्षुब्ध अभिमन्यु उनके साथ बात करना ही नहीं चाहता। तब अर्जुन उसे उत्तेजित करने की भावना से इस प्रकार के व्यङ्ग्यात्मक वचन कहते हैं-

तुम्हारे पिता अर्जुन हैं, मामा श्री कृष्ण हैं तथा तुम शस्त्रविद्या से सम्पन्न होने के साथ ही साथ तरुण भी हो, तुम्हारे लिए युद्ध में परास्त होना उचित है।

मम तु भुजौ एव प्रहरणम्

अभिमन्यु क्षुब्ध है कि उसे धोखे से शस्त्रविहीन भीम ने निगृहीत किया है। भीम इसका स्पष्टीकरण करता है कि अस्त्र-शस्त्र तो दुर्बल व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। मेरी तो भुजा ही मेरा शस्त्र है। अतः मुझे किसी अन्य आयुध की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार का भाव अन्य नाटकों में भी उपलब्ध है, जैसे -

(क) अयं तु दक्षिणो बाहुरायुधं सदृशं मम। (मध्यमव्यायोगः)

(ख) भीमस्यानुकरिष्यामि शस्त्रं बाहुर्भविष्यति। (मृच्छकटिकम्)

(ग) वयमपि च भुजायुद्धप्रधानाः। (अविमारकम्)

नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्

श्री कृष्ण ने जरासन्ध के जामाता (दामाद) कंस का वध किया था। इससे क्रुद्ध जरासन्ध ने यदुवंशियों के विनाश की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए उसने बार-बार मथुरा पर आक्रमण भी किया था। उसने श्री कृष्ण को कई बार पकड़ा भी परन्तु किसी न किसी प्रकार श्री कृष्ण वहाँ से निकल गये। वस्तुतः उचित अवसर पाकर श्री कृष्ण जरासन्ध को मारना चाहते थे परन्तु भीम ने जरासन्ध का वध करके उनकी पात्रता स्वयं ले ली। जो कार्य श्री कृष्ण द्वारा करणीय था उसे भीमसेन ने कर दिया और श्री कृष्ण को जरासन्ध के वध का अवसर ही नहीं दिया।

कोऽयं मध्यमो नाम?

यहाँ मध्यम शब्द का प्रयोग भास द्वारा भीम के लिए किया गया है। भास के नाटकों में सर्वत्र भीम के लिए 'मध्यम' शब्द का प्रयोग किया गया है। उन्होंने 'मध्यमव्यायोग' रूपक की रचना की जिसमें मध्यम पाण्डव अर्थात् भीम को नायक बनाया गया है।

भाषिकविस्तारः

(क) निषेधार्थ में अलम् के योग में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है।

यथा- अलं स्वच्छन्दप्रलापेन।
अलं विवादेन।
अलं प्रमादेन।
अलं कोलाहलेन।

(ख) 'पर्याप्त' अर्थ में अलम् का प्रयोग होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा- भीमः **दुर्योधनाय** अलम्।
अर्जुनः **कर्णाय** अलम्।
रामः **रावणाय** अलम्।
इदं दुग्धं **मह्यम्** अलम्।

वाच्य के तीन भेद हैं- (*i*) कर्तृवाच्य (*ii*) कर्मवाच्य (*iii*) भाववाच्य

कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्तृपद के पुरुष और वचन के अनुसार होती है।

यथा- रामः पाठं पठति।

कर्मवाच्य में कर्मपद प्रथमा में होता है, कर्ता तृतीया में तथा क्रिया कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार होती है।

यथा - रामेण पाठः पठ्यते।

भाववाच्य अकर्मक क्रिया से होता है। इसमें कर्ता तृतीया में होता है तथा क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन में रहती है।

यथा - बालैः हस्यते।

कर्तृ, कर्म तथा भाववाच्य में क्रियारूप

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य/भाववाच्य**
पठति	पठ्यते
लिखति	लिख्यते
खादति	खाद्यते
पिबति	पीयते
गायति	गीयते
शृणोति	श्रूयते

विशेष - धातु से 'य' प्रत्यय लगाकर कर्मवाच्य/भाववाच्य के रूप 'सेव्' (आत्मनेपदी) धातु के समान बनाये जाते हैं।

क्त/क्तवतु प्रत्यय

'क्त' प्रत्यय कृत् प्रत्यय है। यह भूतकाल का द्योतक है। इसका प्रयोग तीनों लिङ्गों में होता है। इस प्रत्यय से बने शब्द विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

यथा-	**धातु**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**	**पुं.**	**स्त्री.**	**नपुं.**
	पठ्	क्त	पठित	पठितः	पठिता	पठितम्
	गम्	क्त	गत	गतः	गता	गतम्
	दृश्	क्त	दृष्ट	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्

'क्तवतु' भी भूतकालिक प्रत्यय है। इसका प्रयोग सदैव कर्तृवाच्य में होता है। क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द भी तीनों लिङ्गों में होते हैं।

यथा- पठ् + क्तवतु = पठितवत्

		एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पु.	**प्र. वि.**	पठितवान्	पठितवन्तौ	पठितवन्तः
स्त्री.	**प्र. वि.**	पठितवती	पठितवत्यौ	पठितवत्यः
नपुं.	**प्र. वि.**	पठितवत्	पठितवती	पठितवन्ति

वाच्यपरिवर्तनम्

(क)	येन	पितरः	दर्शिताः। (कर्मवाच्य)
	यः	पितॄन्	दर्शितवान्। (कर्तृवाच्य)
(ख)	भवद्भिः	वयं	परिरक्षिताः। (कर्मवाच्य)
	भवन्तः	अस्मान्	परिरक्षितवन्तः। (कर्तृवाच्य)
(ग)	केन	अयं	गृहीतः? (कर्मवाच्य)
	कः	इमं	गृहीतवान्? (कर्तृवाच्य)

अष्टमः पाठः

लौहतुला

प्रस्तुत पाठ **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित **'पञ्चतन्त्रम्'** नामक कथाग्रन्थ के **'मित्रभेद'** नामक तन्त्र से सङ्कलित है। इसमें विदेश से लौटकर **जीर्णधन** नामक व्यापारी अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। 'तराजू चूहे खा गये हैं' ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि 'पुत्र को बाज उठा ले गया है।' इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयाद्देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्-

यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ताः स्ववीर्यतः।
तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः।।

तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरमागत्य तं श्रेष्ठिनमुवाच-"भोः श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।" स आह-"भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैर्भक्षिता" इति।

जीर्णधन आह-"भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति। ईदृगेवायं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वमात्मीयं शिशुमेनं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति।

स श्रेष्ठी स्वपुत्रमुवाच-"वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् गम्यतामनेन सार्धम्" इति।

अथासौ वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य सत्त्वरं गृहमागतः।

पृष्टश्च तेन वणिजा-''भो:! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुर्यस्त्वया सह नदीं गत:''? इति।

स आह-''नदीतटात्स श्येनेन हृत:'' इति। श्रेष्ठ्याह - ''मिथ्यावादिन्! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।'' इति।

स आह-''भो: सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।'' इति।

एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच-"भो:! अब्रह्मण्यम्! अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरेणापहृत:'' इति।

अथ धर्माधिकारिणस्तमूचु:-''भो:! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुत:''।

स आह-''किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटाच्छ्येनेन अपहृत: शिशु:''। इति।

तच्छ्रुत्वा ते प्रोचु:-भो:! न सत्यमभिहितं भवता-किं श्येन: शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

स आह-भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः-

तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः।
राजन्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।

ते प्रोचुः-"कथमेतत्"।

ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास। ततस्तैर्विहस्य द्वावपि तौ परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितौ।

शब्दार्थाः

अधिष्ठाने	स्थाने	स्थान पर
विभवक्षयात्	धनाभावात्	धन के अभाव के कारण
स्ववीर्यतः	स्वपराक्रमेण	अपने पराक्रम से
लौहघटिता तुला	लौहनिर्मिता तुला	लोहे से बनी हुई तराजू
निक्षेपः	न्यासः	धरोहर
भ्रान्त्वा	भ्रमणं कृत्वा (देशाटनं कृत्वा)	पर्यटन करके
त्वदीया	तव, भवदीया	तुम्हारी
ईदृक्	एतादृशः	ऐसा ही
एनम्	एतम्/एनम् च पुंसि द्वितीयैकवचने उभे एव रूपे भवतः।	इसे, एतत् शब्द पुं. द्वि. वि. ए. व. में एतत्/एनम् दोनों ही रूप होते हैं।
आत्मीयम्	आत्मसम्बन्धि	अपना
स्नानोपकरणहस्तम्	स्नानसामग्री हस्ते यस्य सः, तम्	स्नान की सामग्री से युक्त हाथ वाला।
वणिजा	व्यापारिणा	व्यापारी के द्वारा
श्येनः	हिंसकप्रवृत्तिकः पक्षिविशेषः	बाज
अब्रह्मण्यम्	अन्यायरूपम् अनुचितम्	घोर अन्याय

समर्पय	देहि	दो
विवदमानौ	कलहं कुर्वन्तौ	झगड़ा करते हुए
तारस्वरेण	उच्चस्वरेण	जोर से
ऊचुः	अवदन्	बोले
अभिहितम्	कथितम्	कहा गया
मद्वचः	मम वचनानि	मेरी बातें
आदितः	प्रारम्भतः	आरम्भ से
निवेदयामास	निवेदनमकरोत्	निवेदन किया
विहस्य	हसित्वा	हँसकर
संबोध्य	बोधयित्वा	समझा बुझा कर

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) देशान्तरं गन्तुमिच्छन् वणिक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत्?
(ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत्?
(ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?
(घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् उवाच?
(ङ) धर्माधिकारिभिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं सन्तोषितौ?

2. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) **जीर्णधनः** विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।
(ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।
(ग) श्रेष्ठी उच्चस्वरेण उवाच-**भोः अब्रह्मण्यम् अब्रह्मण्यम्।**
(घ) सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य **तुला-शिशु-प्रदानेन** सन्तोषितौ।

3. **अधोलिखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः पाठमाधृत्य तं पूरयत-**

(क) यत्र देशे अथवा स्थाने ..... भोगाः भुक्ता ..... विभवहीनः यः ..... स पुरुषाधमः।

(ख) राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य ..... मूषकाः ..... तत्र श्येनः ..... हरेत् अत्र संशयः न।

4. **तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र-**

(क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति
विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय

(ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति
श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्

(ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति
पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः सभ्यानाम्

5. **सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

(क) श्रेष्ठ्याह = ... + आह

(ख) ..... = द्वौ + अपि

(ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + ...

(घ) ..... = यथा + इच्छया

(ङ) स्नानोपकरणम् = ... + उपकरणम्

(च) ..... = स्नान + अर्थम्

6. **समस्तपदं विग्रहं वा लिखत-**

	विग्रहः		**समस्तपदम्**
(क)	स्नानस्य उपकरणम्	=	.....
(ख)	....	=	गिरिगुहायाम्
(ग)	धर्मस्य अधिकारी	=	.....
(घ)	....	=	विभवहीनाः

7. **यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायतया ''लौहतुला'' इति कथायाः सारांशं संस्कृतभाषया लिखत-**

वणिक्पुत्रः	स्नानार्थम्
लौहतुला	अयाचत्
वृत्तान्तं	ज्ञात्वा
श्रेष्ठिनं	प्रत्यागतः
गतः	प्रदानम्

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थ परिचय

महाकवि **विष्णुशर्मा** (200 ई. से 600 ई. के मध्य) ने राजा अमरशक्ति के पुत्रों को राजनीति में पारंगत करने के उद्देश्य से **'पञ्चतन्त्रम्'** नामक सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ पाँच भागों में विभाजित है। इन्हीं भागों को 'तन्त्र' कहा गया है। पञ्चतन्त्र के पाँच तन्त्र हैं-मित्रभेदः, मित्रसंप्राप्तिः, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाशः और अपरीक्षितकारकम्। इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल शब्दों में लघु कथाएँ दी गयी हैं। इनके माध्यम से ही लेखक ने नीति के गूढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन किया है।

भावविस्तारः

'लौहतुला' नामक कथा में दी गयी शिक्षा के सन्दर्भ में इन सूक्तियों को भी देखा जाना चाहिए।

1. न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपुः।
   व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।
2. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

भाषिकविस्तारः

1.

धातुः	क्त	क्तवतु पु.	क्तवतु स्त्री.	अनीयर्	तव्यत्	यत्	ल्युट्	तृच्	ण्वुल्
√नी	नीतः	नीतवान्	नीतवती	×	नेतव्यम्	नेयम्	नयनम्	नेता	नायकः
√प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्	पृष्टवती	×	प्रष्टव्यम्	×	×	प्रष्टा	×
√दा	दत्तः	दत्तवान्	दत्तवती	दानीयम्	दातव्यम्	देयम्	दानम्	दाता	×

2. **तसिल् प्रत्यय**-पञ्चमी विभिक्त के अर्थ में तसिल् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

   यथा- ग्रामात् - ग्रामतः (ग्राम + तसिल्)
   आदेः - आदितः (आदि + तसिल्)

   यथा- छात्रः **विद्यालयात्** आगच्छति।
   छात्रः **विद्यालयतः** आगच्छति।

इसी प्रकार - गृह + तसिल् - गृहतः - गृहात्।
तन्त्र + तसिल् - तन्त्रतः - तन्त्रात्।
प्रथम + तसिल् - प्रथमतः - प्रथमात्।
आरम्भ + तसिल् - आरम्भतः - आरम्भात्।

3. **अभितः परितः उभयतः, सर्वतः, समया, निकषा, 'हा' और प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।**

यथा- **गृहम्** अभितः वृक्षाः सन्ति।
विद्यालयम् परितः द्रुमाः सन्ति।
ग्रामम् उभयतः नद्यौ प्रवहतः।
हा **दुराचारिणम्**।
क्रीडाक्षेत्रम् निकषा तरणतालम् अस्ति।
बालकः **विद्यालयम्** प्रति गच्छति।
नगरम् समया औषधालयः विद्यते।
ग्रामम् सर्वतः गोचारणभूमिः अस्ति।

नवमः पाठः

सिकतासेतुः

प्रस्तुत नाट्यांश **सोमदेवरचित कथासरित्सागर** के सप्तम लम्बक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिए वेष बदलकर इंद्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतुनिर्माण के कार्य में लग जाते हैं। उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है-'अरे! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो?' इंद्र उन्हें उत्तर देते हैं-यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी संभव है। इंद्र के अभिप्राय को जानकर तपोदत्त तपस्या करना छोड़कर गुरुजनों के मार्गदर्शन में विद्या का ठीक-ठीक अभ्यास करने के लिए गुरुकुल चला जाता है।

(*ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः*)

तपोदत्तः - अहमस्मि तपोदत्तः। बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाऽधीतवानस्मि। तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्।

(*ऊर्ध्वं निःश्वस्य*)

हा विधे! किमिदम्मया कृतम्? कीदृशी दुर्बुद्धिरासीत्तदा! एतदपि न चिन्तितं यत्-

परिधानैरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते।
नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे।।1।।

(*किञ्चिद् विमृश्य*)

भवतु, किमेतेन? दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो मन्यते। एष इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

(*जलोच्छलनध्वनिः श्रूयते*)

अये कुतोऽयं कल्लोलोच्छलनध्वनिः? महामत्स्यो मकरो वा भवेत्। पश्यामि तावत्।

(पुरुषमेकं सिकताभिः सेतुनिर्माण-प्रयासं कुर्वाणं दृष्ट्वा सहासम्)

हन्त! नास्त्यभावो जगति मूर्खाणाम्! तीव्रप्रवाहायां नद्यां मूढोऽयं सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते!

(साट्टहासं पार्श्वमुपेत्य)

भो महाशय! किमिदं विधीयते! अलमलं तव श्रमेण। पश्य,

रामो बबन्ध यं सेतुं शिलाभिर्मकरालये।
विदधद् बालुकाभिस्तं यासि त्वमतिरामताम्।।2।।

चिन्तय तावत्। सिकताभिः क्वचित्सेतुः कर्तुं युज्यते?

पुरुषः – भोस्तपस्विन्! कथं मामुपरुणत्सि। प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति? कावश्यकता शिलानाम्? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि स्वसंकल्पदृढतया।

तपोदत्तः – आश्चर्यम्! सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि? सिकता जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्? भवता चिन्तितं न वा?

पुरुषः – (*सोत्प्रासम्*) चिन्तितं चिन्तितम्। सम्यक् चिन्तितम्। नाहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

तपोदत्तः – (*सव्यङ्ग्यम्*)

साधु साधु! आञ्जनेयमप्यतिक्रामसि!

पुरुषः – (*सविमर्शम्*)

कोऽत्र सन्देहः? किञ्च,

विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव केवलम्।

यदि विद्या वशे स्युस्ते, सेतुरेष तथा मम।।3।।

तपोदत्तः – (*सवैलक्ष्यम् आत्मगतम्*)

अये! मामेवोद्दिश्य भद्रपुरुषोऽयम् अधिक्षिपति! नूनं सत्यमत्र पश्यामि। अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषामि! तदियं भगवत्याः शारदाया अवमानना। गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते।

(*प्रकाशम्*)

भो नरोत्तम! नाऽहं जाने यत् कोऽस्ति भवान्। परन्तु भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्। तपोमात्रेण विद्यामवाप्तुं प्रयतमानोऽहमपि सिकताभिरेव सेतुनिर्माणप्रयासं करोमि। तदिदानीं विद्याध्ययनाय गुरुकुलमेव गच्छामि।

(*सप्रणामं गच्छति*)

शब्दार्थाः

सिकता	बालुका	रेत
सेतुः	जलबन्धः	पुल
तपस्यारतः	तपः कुर्वन्	तपस्या में लीन

पितृचरणैः	तातपादैः	पिताजी के द्वारा
क्लेश्यमानः	संताप्यमानः	व्याकुल किया जाता हुआ
अधीतवान्	अध्ययनं कृतवान्	पढ़ा
कुटुम्बिभिः	परिवारजनैः	कुटुम्बियों द्वारा
ज्ञातिजनैः	बन्धुबान्धवैः	बन्धु-बान्धवों द्वारा
गर्हितः	निन्दितः	अपमानित
निःश्वस्य	दीर्घश्वासं गृहीत्वा	लम्बी साँस लेकर
दुर्बुद्धिः	दुर्मतिः	दुष्ट बुद्धिवाला
परिधानैः	वस्त्रैः	कपड़ों से, पहनावों से
मार्गभ्रान्तः	पथभ्रष्टः	राह से भटका हुआ
उपैति	प्राप्नोति, समीपं गच्छति	जाता है, समीप जाता है
तपश्चर्यया	तपसा	तपस्या के द्वारा
जलोच्छलनध्वनिः	जलोर्ध्वगतेः शब्दः	पानी के उछलने की आवाज
कल्लोलोच्छलनध्वनिः	तरङ्गोच्छलनस्य शब्दः	तरंगों के उछलने की ध्वनि
कुर्वाणम्	कुर्वन्तम्	करते हुए
सहासम्	हासपूर्वकम्	हँसते हुए
सोत्प्रासम्	उपहासपूर्वकम्	खिल्ली उड़ाते हुए, चुटकी लेते हुए
साट्टहासम्	अट्टहासपूर्वकम्	जोर से हँसकर
अट्टम्	अट्टालिकाम्	अटारी को
अधिरोढुम्	उपरि गन्तुम्	चढ़ने के लिए
उपरुणत्सि	अवरोधं करोषि	रोकते हो
आञ्जनेयम्	हनुमन्तम्	अञ्जनिपुत्र हनुमान् को
सविमर्शम्	विचारसहितम्	सोच-विचार कर
सवैलक्ष्यम्	सलज्जम्	लज्जापूर्वक
वैदुष्यम्	पाण्डित्यम्	विद्वत्ता
उन्मीलितम्	उद्घाटितम्	खोल दी

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत्?
(ख) तपोदत्तः केन प्रकारेण विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्?
(ग) तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहसत्?
(घ) तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः कीदृशः कथितः?
(ङ) अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय कुत्र गतः?

2. भिन्नवर्गीयं पदं चिनुत-

यथा- अधिरोढुम्, गन्तुम्, **सेतुम्,** निर्मातुम्।

(क) निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य।
(ख) विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलषामि।
(ग) तपोभिः, दुर्बुद्धिः, सिकताभिः, कुटुम्बिभिः।

3. (क) रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(*i*) अलमलं तव श्रमेण।
(*ii*) न अहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि।
(*iii*) चिन्तितं भवता न वा।
(*iv*) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः।
(*v*) भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्।

(ख) अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति?

कथनानि	कः	कम्
(*i*) हा विधे! किमिदं मया कृतम्?	.....	.....
(*ii*) भो महाशय! किमिदं विधीयते।	.....	.....
(*iii*) भोस्तपस्विन्! कथं माम् उपरुणत्सि।	.....	.....
(*iv*) सिकताः जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्?	.....	.....
(*v*) नाहं जाने कोऽस्ति भवान्?	.....	.....

4. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) तपोदत्तः **तपश्चर्यया** विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्ति।
(ख) **तपोदत्तः** कुटुम्बिभिः मित्रैः गर्हितः अभवत्।

(ग) पुरुषः **नद्यां** सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते।
(घ) तपोदत्तः **अक्षरज्ञानं** विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति।
(ङ) तपोदत्तः **विद्याध्ययनाय** गुरुकुलम् अगच्छत्।
(च) **गुरुगृहं** गत्वैव विद्याभ्यासः करणीयः।

5. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि लिखत-

विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
यथा- संकल्पस्य सातत्येन	संकल्पसातत्येन
(क) अक्षराणां ज्ञानम्	.....
(ख) सिकतायाः सेतुः	.....
(ग) पितुः चरणैः	.....
(घ) गुरोः गृहम्	.....
(ङ) विद्यायाः अभ्यासः	.....

6. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत-

समस्तपदानि	**विग्रहः**
यथा- नयनयुगलम्	नयनयोः युगलम्
(क) जलप्रवाहे	.....
(ख) तपश्चर्यया	.....
(ग) जलोच्छलनध्वनिः	.....
(घ) सेतुनिर्माणप्रयासः	.....

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनं वाक्यद्वयं रचयत-

(क) **यथा**- अलं चिन्तया। ('अलम्' योगे तृतीया)
(*i*) .... (भय)
(*ii*) .... (कोलाहल)
(ख) **यथा**- माम् अनु स गच्छति। ('अनु' योगे द्वितीया)
(*i*) .... (गृह)
(*ii*) .... (पर्वत)

(ग) **यथा**- अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलषसि। ('विना' योगे द्वितीया)

(*i*) .... (परिश्रम)

(*ii*) .... (अभ्यास)

(घ) **यथा**- सन्ध्यां यावत् गृहमुपैति। ('यावत्' योगे द्वितीया)

(*i*) .... (मास)

(*ii*) .... (वर्ष)

योग्यताविस्तारः

(क) **कवि परिचय** - कथासरित्सागर के रचयिता कश्मीर निवासी **श्री सोमदेव भट्ट** हैं। ये कश्मीर के राजा श्री अनन्तदेव के सभापण्डित थे। कवि ने रानी सूर्यमती के मनो-विनोद के लिए कथासरित्सागर नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ का मूल महाकवि गुणाढ्य की बृहत्कथा (प्राकृत ग्रन्थ) है।

(ख) **ग्रन्थ परिचय** - कथासरित्सागर अनेक कथाओं का महासमुद्र है। इस ग्रन्थ में अठारह लम्बक हैं। मूलकथा की पुष्टि के लिए अनेक उपकथाएँ वर्णित की गई हैं। प्रस्तुत कथा रत्नप्रभा नामक लम्बक से सङ्कलित की गई है। ज्ञान-प्राप्ति केवल तपस्या से नहीं, बल्कि गुरु के समीप जाकर अध्ययनादि कार्यों के करने से होती है। यही इस कथा का सार है।

(ग) **पर्यायवाचिनः शब्दाः**-

इदानीम्	-	अधुना, साम्प्रतम्, सम्प्रति।
जलम्	-	वारि, उदकम्, सलिलम्।
नदी	-	सरित्, तटिनी, तरङ्गिणी।
पुरुषार्थः	-	उद्योगः, उद्यमः, परिश्रमः।

(घ) **विलोमशब्दाः**-

दुर्बुद्धिः	-	सुबुद्धिः
गर्हितः	-	प्रशंसितः
प्रवृत्तः	-	निवृत्तः
अभ्यासः	-	अनभ्यासः
सत्यम्	-	असत्यम्

(ङ) **तुमुन्-प्रत्यय-प्रयोगः-**

('तुमुन्' प्रत्यय में 'तुम्' शेष बचता है। 'तुमुन्' इत्येतस्य 'तुम्' इत्येव भागोऽवशिष्यते)

यथा-

+ √कृ + तुमुन् = कर्तुम्
+ √गम् + तुमुन् = गन्तुम्
+ अधि + √रुह् + तुमुन् = अधिरोढुम्
+ निर् + √मा + तुमुन् = निर्मातुम्
+ अव + √आप् + तुमुन् = अवाप्तुम्

(च) **आत्मगतम्** - नाटकों में प्रयुक्त यह एक पारिभाषिक शब्द है। जब नट या अभिनेता रंगमञ्च पर अपने कथन को दूसरों को सुनाना नहीं चाहता, मन में ही सोचता है तब उसके कथन को 'आत्मगतम्' कहा जाता है।

(छ) **प्रकाशम्** - जब नट या अभिनेता के संवाद रंगमञ्च पर दर्शकों के सामने प्रकट किये जाते हैं, तब उन संवादों को 'प्रकाशम्' शब्द से सूचित किया जाता है।

(ज) **अतिरामता** - राम से आगे बढ़ जाने की स्थिति को 'अतिरामता' कहा गया है-रामम् अतिक्रान्तः = अतिरामः, तस्य भावः = **अतिरामता**। राम ने शिलाओं से समुद्र में सेतु का निर्माण किया था। विप्र-रूपधारी इन्द्र को सिकता-कणों से सेतु बनाते देख तपोदत्त उनका उपहास करते हुए कहता है कि तुम राम से आगे बढ़ जाना चाहते हो।

निम्नलिखित कहावतों को पाठ में आए हुए संस्कृत वाक्यांश में पहचानिये-

(*i*) सुबह का भूला शाम को घर लौट आये, तो भूला नहीं कहलाता है।

(*ii*) मेरी आँखें खुल गईं।

(झ) **आञ्जनेयम्** - अञ्जना के पुत्र होने के कारण हनुमान् को आञ्जनेय कहा जाता है। हनुमान् उछलकर कहीं भी जाने में समर्थ थे। इसलिए इन्द्र के यह कहने पर कि मैं सीढ़ी से जाने में विश्वास नहीं करता हूँ अपितु उछलकर ही जाने में समर्थ हूँ, तपोदत्त फिर से उपहास करते हुए कहता है कि पहले आपने पुल निर्माण में राम को लाँघ लिया और अब उछलने में हनुमान् को भी लाँघने की इच्छा कर रहे हैं।

(ञ) **अक्षरज्ञानस्य माहात्म्यम्-**

(*i*) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

(*ii*) किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

(*iii*) यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयते।
तस्य दिवाकरकिरणैः नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धिः।।

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

कथासरित्सागर (संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर) राधावल्लभ त्रिपाठी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

दशमः पाठः

जटायोः शौर्यम्

प्रस्तुत पाठ्यांश आदिकवि वाल्मीकि-प्रणीत रामायणम् के अरण्यकाण्ड से उद्धृत किया गया है जिसमें जटायु और रावण के युद्ध का वर्णन है। पंचवटी कानन में सीता का करुण विलाप सुनकर पक्षिश्रेष्ठ जटायु उनकी रक्षा के लिए दौड़े। वे रावण को परदाराभिमर्शनरूप निन्द्य एवं दुष्कर्म से विरत होने के लिए कहते हैं। रावण की अपरिवर्तित मनोवृत्ति को देख वे उस पर भयावह आक्रमण करते हैं। महाबली जटायु अपने तीखे नखों तथा पञ्जों से रावण के शरीर में अनेक घाव कर देते हैं तथा पञ्जों के प्रहार से उसके विशाल धनुष को खंडित कर देते हैं। टूटे धनुष, मारे गये अश्वों और सारथी वाला रावण विरथ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। कुछ ही क्षणों बाद क्रोधांध रावण जटायु पर प्राणघातक प्रहार करता है परंतु पक्षिश्रेष्ठ जटायु उससे अपना बचाव कर उस पर चञ्चु-प्रहार करते हैं, उसके बायें भाग की दशों भुजाओं को क्षत-विक्षत कर देते हैं।

सा तदा करुणा वाचो विलपन्ती सुदुःखिता।
वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्शायतलोचना ॥1॥

जटायो पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत्।
अनेन राक्षसेन्द्रेण करुणं पापकर्मणा ॥2॥

तं शब्दमवसुप्तस्तु जटायुरथ शुश्रुवे।
निरीक्ष्य रावणं क्षिप्रं वैदेहीं च ददर्श सः ॥3॥

ततः पर्वतशृङ्गाभस्तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।
वनस्पतिगतः श्रीमान्व्याजहार शुभां गिरम् ॥4॥

निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।
न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥5॥

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ।।6।।

तस्य तीक्ष्णनखाभ्यां तु चरणाभ्यां महाबलः।
चकार बहुधा गात्रे व्रणान्पतगसत्तमः ।।7।।

ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम्।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्जास्य महद्धनुः ।।8।।

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अङ्केनादाय वैदेहीं पपात भुवि रावणः ।।9।।

संपरिष्वज्य वैदेहीं वामेनाङ्केन रावण:।
तलेनाभिजघानाशु जटायुं क्रोधमूर्च्छित: ॥10॥

जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिप:।
वामबाहून्दश तदा व्यपाहरदरिन्दम: ॥11॥

शब्दार्था:

ह्रियमाणाम्	नीयमानाम्	ले जाई जाती/अपहरण की जाती हुई
राक्षसेन्द्रेण	दानवपतिना	राक्षसों के राजा द्वारा
परदाराभिमर्शनात्	परस्त्रीस्पर्शात्	पराई स्त्री के स्पर्श से
विगर्हयेत्	निन्द्यात्	निन्दा करनी चाहिए
धन्वी	धनुर्धर:	धनुर्धर
कवची	कवचधारी	कवच धारण किए हुए
शरी	बाणधर:	बाण को लिए हुए
व्याजहार	अकथयत्	कहा
निवर्तय	वारणं कुरु	मना करो, रोको
व्यपाहरत्	उत्खातवान्	उखाड़ दिया
वैदेहीम्	सीताम्	सीता को
व्रणान्	प्रहारजनितस्फोटान्	प्रहार (चोट) से होने वाले घावों को
बभञ्ज	भग्नं कृतवान्	तोड़ दिया
पतगेश्वर:	जटायु:	जटायु (पक्षिराज)
विधूय	अपसार्य	दूर हटाकर
भग्नधन्वा	भग्न: धनु: यस्य स:	टूटे हुए धनुष वाला
हताश्व:	हता: अश्वा: यस्य स:	मारे गए घोड़ों वाला
आदाय	गृहीत्वा	लेकर
अभिजघान	हतवान्	मार डाला
आशु	शीघ्रम्	शीघ्र ही
तुण्डेन	मुखेन, चञ्च्वा	चोंच के द्वारा
खगाधिप:	पक्षिराज:	पक्षियों का राजा
अरिन्दम:	शत्रुदमन:, शत्रुनाशक:	शत्रुओं को नष्ट करने वाला

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

   (क) "जटायो! पश्य" इति का वदति?

   (ख) जटायुः रावणं किं कथयति?

   (ग) क्रोधवशात् रावणः किं कर्तुम् उद्यतः अभवत्?

   (घ) पतगेश्वरः रावणस्य कीदृशं चापं सशरं बभञ्ज?

   (ङ) हताश्वो हतसारथिः रावणः कुत्र अपतत्?

2. **उदाहरणमनुसृत्य णिनि-प्रत्ययप्रयोगं कृत्वा पदानि रचयत-**

   यथा- गुण + णिनि – गुणिन् (गुणी)

   दान + णिनि – दानिन् (दानी)

   (क) कवच + णिनि – .....

   (ख) शर + णिनि – .....

   (ग) कुशल + णिनि – .....

   (घ) धन + णिनि – .....

   (ङ) दण्ड + णिनि – .....

3. **रावणस्य जटायोश्च विशेषणानि सम्मिलितरूपेण लिखितानि तानि पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत-**

   युवा, सशरः, वृद्धः, हताश्वः, महाबलः, पतगसत्तमः, भग्नधन्वा, महागृध्रः, खगाधिपः, क्रोधमूर्च्छितः, पतगेश्वरः, सरथः, कवची, शरी

   यथा-

रावणः	**जटायुः**
युवा	वृद्धः
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

4. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-**

यथा-	च	+	आदाय	=	चादाय
(क)	हत	+	अश्व:	=	.....
(ख)	तुण्डेन	+	अस्य	=	.....
(ग)	.....	+	.....	=	बभञ्जास्य
(घ)	.....	+	.....	=	अङ्केनादाय
(ङ)	.....	+	.....	=	खगाधिप:

5. **'क' स्तम्भे लिखितानां पदानां पर्याया: 'ख' स्तम्भे लिखिता:। तान् यथासमक्षं योजयत-**

क	ख
कवची	अपतत्
आशु	पक्षिश्रेष्ठ:
विरथ:	पृथिव्याम्
पपात	कवचधारी
भुवि	शीघ्रम्
पतगसत्तम:	रथविहीन:

6. **अधोलिखितानां पदानां/विलोमपदानि मञ्जूषायां दत्तेषु पदेषु चित्वा यथासमक्षं लिखत-**

मन्दम्	पुण्यकर्मणा	हसन्ती	अनार्य	अनतिक्रम्य
प्रदाय	देवेन्द्रेण	प्रशंसेत्	दक्षिणेन	युवा

पदानि	**विलोमशब्दा:**
(क) विलपन्ती	.....
(ख) आर्य	.....
(ग) राक्षसेन्द्रेण	.....
(घ) पापकर्मणा	.....
(ङ) क्षिप्रम्	.....
(च) विगर्हयेत्	.....
(छ) वृद्ध:	.....
(ज) आदाय	.....
(झ) वामेन	.....
(ञ) अतिक्रम्य	.....

7. (क) अधोलिखितानि विशेषणपदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत-

(*i*) शुभाम् ..... (*iv*) खगाधिपः .....

(*ii*) हतसारथिः ..... (*v*) वामेन .....

(*iii*) कवची .....

(ख) उदाहरणमनुसृत्य समस्तं पदं रचयत-

यथा- त्रयाणां लोकानां समाहारः - त्रिलोकी

(*i*) पञ्चानां वटानां समाहारः - .....

(*ii*) सप्तानां पदानां समाहारः - .....

(*iii*) अष्टानां भुजानां समाहारः - .....

(*iv*) चतुर्णां मुखानां समाहारः - .....

योग्यताविस्तारः

(क) कवि परिचय

महर्षि वाल्मीकि आदिकाव्य रामायण के रचयिता हैं। कहा जाता है कि वाल्मीकि का हृदय, एक व्याध द्वारा क्रीडारत क्रौञ्चयुगल (पक्षियों के जोड़े) में से एक के मार दिये जाने पर उसकी सहचरी के विलाप को सुनकर द्रवित हो गया तथा उनके मुख से शाप के रूप में जो वाणी निकली वह श्लोक के रूप में थी। वही श्लोक लौकिक संस्कृत का आदिश्लोक माना जाता है-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

(ख) भाव विस्तार

जटायु-सूर्य के सारथी अरुण के दो पुत्र थे-सम्पाती और जटायु। जटायु पञ्चवटी वन के पक्षियों का राजा था जहाँ अपने पराक्रम एवं बुद्धिकौशल से शासन करता था। पञ्चवटी में रावण द्वारा अपहरण की गयी सीता के विलाप को सुनकर जटायु ने सीता की रक्षा के लिए रावण के साथ युद्ध किया और वीरगति पाई। इस प्रकार राज-धर्म की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले जटायु को भारतीय संस्कृति का महान् नायक माना जाता है।

(ग) सीता विषयक सूचना देते हुए जटायु ने राम से जो वचन कहे वे इस प्रकार हैं-

यामोषधीमिवायुष्मन्नन्वेषसि महावने।
सा च देवी मम प्राणाः रावणेनोभयं हृतम्॥

भाषिकविस्तार:

(घ) वाक्य प्रयोग

- गिरम् – छात्र: मधुरां **गिरम्** उवाच।
- पतगेश्वर: – पक्षिराज: जटायु: **पतगेश्वर:** अपि कथ्यते।
- शरी – **शरी** रावण: नि:शस्त्रेण जटायुना आक्रान्त:।
- विधूय – वीर: शत्रुप्रहारान् **विधूय** अग्रे अगच्छत्।
- व्रणान् – चिकित्सक: औषधेन **व्रणान्** विरोपितान् अकरोत्।
- पपात – वृक्ष: कुठारेण छिन्न: सन् भूमौ **पपात**।
- तुण्डेन – शुका: **तुण्डेन** तण्डुलान् खादन्ति।
- व्यपाहरत् – जटायु: रावणस्य बाहून् **व्यपाहरत्**।
- आशु – स्वकार्यम् **आशु** सम्पादय।
- अभिजघान – राम: वने अनेकान् राक्षसान् **अभिजघान**।

(ङ) स्त्रीप्रत्यय-

टाप् प्रत्यय-करुणा, दु:खिता, शुभा, निम्ना, रक्षणीया

ङीप् प्रत्यय-विलपन्ती, यशस्विनी, वैदेही, कमलपत्राक्षी

ति प्रत्यय-युवति:

पुंल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग पद निर्माण में टाप्-ङीप्-ति प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। टाप् प्रत्यय का 'आ' तथा ङीप् प्रत्यय का 'ई' शेष रहता है।

यथा-

- मूषक + टाप् = मूषिका
- बालक + टाप् = बालिका
- अश्व + टाप् = अश्वा
- वत्स + टाप् = वत्सा
- हसन् + ङीप् = हसन्ती
- मानुष: + ङीप् = मानुषी
- मानिन् + ङीप् = मानिनी
- राजन् + ङीप् = राज्ञी

एकादशः पाठः

पर्यावरणम्

प्रस्तुत पाठ्यांश पर्यावरण को ध्यान में रखकर लिखा गया एक लघु निबन्ध है। वर्तमान युग में प्रदूषित वातावरण मानव-जीवन के लिए भयङ्कर अभिशाप बन गया है। नदियों का जल कलुषित हो रहा है, वन वृक्षों से रहित हो रहे हैं, मिट्टी का कटाव बढ़ने से बाढ़ की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। कल-कारखानों और वाहनों के धुएँ से वायु विषैली हो रही है। वन्य-प्राणियों की जातियाँ भी नष्ट हो रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार वृक्षों एवं वनस्पतियों के अभाव में मनुष्यों के लिए जीवित रहना असम्भव प्रतीत होता है। पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ, छाया एवं औषधि प्रदान करने वाले पादपों एवं वृक्षों की उपयोगिता वर्तमान समय में पूर्वापेक्षया अधिक है। ऐसी परिस्थिति में हमारा कर्तव्य है कि हम पर्यावरण के संरक्षणार्थ उपाय करें। वृक्षों के रोपण, नदी-जल की स्वच्छता, ऊर्जा के संरक्षण, वापी, कूप, तड़ाग, उद्यान आदि के निर्माण और उनको स्वच्छ रखने में प्रयत्नशील हों ताकि जीवन सुखमय एवं उपद्रव रहित हो सके।

प्रकृतिः समेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः, तर्पयति च सुखसाधनैः। पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः, आकाशश्चास्याः प्रमुखानि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। यथाऽजातश्शिशुः मातृगर्भे सुरक्षितस्तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं, सत्यसङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च प्रददाति। प्रकृतिकोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः, अग्निभयैः, भूकम्पैः, वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

अतएव प्रकृतिरस्माभिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं रक्षितं भविष्यति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलाशंसिन ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने एव सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। विविधा विहगाः कलकूजितैस्तत्र श्रोत्ररसायनं ददति।

सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति।

परन्तु स्वार्थान्धो मानवस्तदेव पर्यावरणमद्य नाशयति। स्वल्पलाभाय जना बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपात्यते येन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो जायते। नदीजलमपि तत्सर्वथाऽपेयं जायते। वनवृक्षा निर्विवेकं छिद्यन्ते व्यापारवर्धनाय, येन अवृष्टिः प्रवर्धते, वनपशवश्च शरणरहिता ग्रामेषु उपद्रवं विदधति। शुद्धवायुरपि वृक्षकर्तनात् सङ्कटापन्नो जातः। एवं हि स्वार्थान्धमानवैर्विकृतिमुपगता प्रकृतिरेव तेषां विनाशकर्त्री सञ्जाता। पर्यावरणे विकृतिमुपगते जायन्ते विविधा रोगा भीषणसमस्याश्च। तत्सर्वमिदानीं चिन्तनीयं प्रतिभाति।

धर्मो रक्षति रक्षितः इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः। तत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतनविश्रामगृहादिस्थापनञ्च

धर्मसिद्धेः स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम्। कुक्कुरसूकरसर्पनकुलादिस्थलचरा, मत्स्यकच्छपमकरप्रभृतयो जलचराश्चापि रक्षणीयाः, यतस्ते स्थलमलापनोदिनो जलमलापहारिणश्च। प्रकृतिरक्षयैव सम्भवति लोकरक्षेति न संशयः।

शब्दार्थाः

पुष्णाति	पोषणं करोति	पुष्ट करता है
अजातः शिशुः	अनुत्पन्नजातकः	अजन्मा शिशु
कुक्षौ	गर्भे	गर्भ में
जलप्लावनैः	जलौघैः	बाढ़ से
वात्याचक्रैः	वातचक्रैः	आँधी, बवंडर
लोकमङ्गलाशंसिनः	समाजकल्याणकामाः	जनता के कल्याण को चाहने वाले
श्रोत्ररसायनम्	कर्णामृतम्	कान को अच्छा लगने वाला
गिरिनिर्झराः	पर्वतानां प्रपाताः	पहाड़ों से निकलने वाले झरने
यन्त्रागाराणाम्	यन्त्रालयानाम्	कारखानों के
अपेयम्	पातुम् अयोग्यम्	न पीने योग्य
वृक्षकर्तनात्	वृक्षाणाम् उच्छेदात्	पेड़ों के काटने से
देवायतनम्	देवालयः, मन्दिरम्	मन्दिर
स्थलमलापनोदिनः	भूमिमलापसारिणः	भूमि की गन्दगी को दूर करने वाले

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

   (क) प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि कानि सन्ति?
   (ख) स्वार्थान्धः मानवः किं करोति?
   (ग) पर्यावरणे विकृते जाते किं भवति?
   (घ) अस्माभिः पर्यावरणस्य रक्षा कथं करणीया?
   (ङ) लोकरक्षा कथं संभवति?
   (च) परिष्कृतं पर्यावरणम् अस्मभ्यं किं किं ददाति?

2. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) **वनवृक्षाः** निर्विवेकं छिद्यन्ते।

(ख) **वृक्षकर्तनात्** शुद्धवायुः न प्राप्यते।

(ग) प्रकृतिः **जीवनसुखं** प्रददाति।

(घ) अजातशिशुः **मातृगर्भे** सुरक्षितः तिष्ठति।

(ङ) पर्यावरणरक्षणं **धर्मस्य** अङ्गम् अस्ति।

3. **उदाहरणमनुसृत्य पदरचनां कुरुत-**

(क) **यथा**- जले चरन्ति इति - जलचराः

स्थले चरन्ति इति - .....

निशायां चरन्ति इति - .....

व्योम्नि चरन्ति इति - .....

गिरौ चरन्ति इति - .....

भूमौ चरन्ति इति - .....

(ख) **यथा**- न पेयम् इति - अपेयम्

न वृष्टि इति - .....

न सुखम् इति - .....

न भावः इति - .....

न पूर्णः इति - .....

4. **उदाहरणमनुसृत्य पदनिर्माणं कुरुत-**

यथा-वि + कृ + क्तिन् = विकृतिः

(क) प्र + गम् + क्तिन् = ...

(ख) दृश् + क्तिन् = ...

(ग) गम् + क्तिन् = ...

(घ) मन् + क्तिन् = ...

(ङ) शम् + क्तिन् = ...

(च) भी + क्तिन् = ...

(छ) जन् + क्तिन् = ...

(ज) भज् + क्तिन् = ...

(झ) नी + क्तिन् = ...

5. **निर्देशानुसारं परिवर्तयत-**

यथा-स्वार्थान्धो मानवः अद्य पर्यावरणं नाशयति (बहुवचने)।
स्वार्थान्धाः मानवाः अद्य पर्यावरणं नाशयन्ति।

(क) सन्तप्तस्य मानवस्य मङ्गलं कुतः? (बहुवचने)

(ख) मानवाः पर्यावरणकुक्षौ सुरक्षिताः भवन्ति। (एकवचने)

(ग) वनवृक्षाः निर्विवेकं छिद्यन्ते। (एकवचने)

(घ) गिरिनिर्झराः निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। (द्विवचने)

(ङ) सरित् निर्मलं जलं प्रयच्छति। (बहुवचने)

6. **पर्यावरणरक्षणाय भवन्तः किं करिष्यन्ति इति विषये पञ्च वाक्यानि लिखत।**

यथा- अहं विषाक्तम् अवकरं नदीषु न पातयिष्यामि।

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

7. **(क) उदाहरणमनुसृत्य उपसर्गान् पृथक्कृत्वा लिखत-**

यथा- संरक्षणाय	-	**सम्**
(*i*) प्रभवति	-	.....
(*ii*) उपलभ्यते	-	.....
(*iii*) निवसन्ति	-	.....
(*iv*) समुपहरन्ति	-	.....
(*v*) वितरन्ति	-	.....
(*vi*) प्रयच्छन्ति	-	.....
(*vii*) उपगता	-	.....
(*viii*) प्रतिभाति	-	.....

(ख) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं लिखत-

यथा- तेजोवायुः - तेजः वायुः च।
गिरिनिर्झराः - गिरयः निर्झराः च।

(*i*) पत्रपुष्पे - .....
(*ii*) लतावृक्षौ - .....
(*iii*) पशुपक्षी - .....
(*iv*) कीटपतङ्गौ - .....

परियोजनाकार्यम्

(क) विद्यालयप्राङ्गणे स्थितस्य उद्यानस्य वृक्षाः पादपाश्च कथं सुरक्षिताः स्युः तदर्थं प्रयत्नः करणीयः इति सप्तवाक्येषु लिखत।

(ख) अभिभावकस्य शिक्षकस्य वा सहयोगेन एकस्य वृक्षस्य आरोपणं करणीयम्। (यदि स्थानम् अस्ति।) तर्हि विद्यालय-प्राङ्गणे, नास्ति चेत् स्वस्मिन् प्रतिवेशे, गृहे वा।) कृतं सर्वं दैनन्दिन्यां लिखित्वा शिक्षकं दर्शयत।

योग्यताविस्तारः

(क) **च्वि प्रत्यय का प्रयोग -**

अभूततद्भावे च्वि - जो वस्तु पहले न हो उसके हो जाने में च्वि प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। च्वि प्रत्यय का प्रयोग केवल भू तथा कृ धातुओं के साथ होता है। शब्द के अन्तिम स्वर का 'ई' हो जाता है।

यथा- अङ्गीकृतम् - अनङ्गस्य (अस्वीकृतस्य) अङ्गं कृतम् अङ्गीकृतम् (स्वीकृतम्)
कृष्णीक्रियते - अकृष्णस्य कृष्णः क्रियते
ब्रह्मीभवति - अब्रह्मणः ब्रह्म भवति
द्रवीक्रियते - अद्रवस्य द्रवः क्रियते

(ख) **निम्नलिखित शब्दयुग्मों के भेद देखने योग्य हैं-**

सङ्कल्पः - सत्सङ्कल्पः
आचारः - सदाचारः
जनः - सज्जनः
सङ्गतिः - सत्सङ्गतिः
मतिः - सन्मतिः

(ग) **आर्षवचन** - ऋषि के द्वारा कहा गया वचन **'आर्षवचन'** कहलाता है।

(घ) **पञ्चतत्त्व** - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इन पाँच तत्त्वों से ही यह शरीर बनता है।

समानान्तर श्लोक व सूक्तियाँ

पर्यावरण से सम्बन्धित निम्न उक्तियाँ एवं श्लोक पढ़ने योग्य तथा याद करने योग्य हैं-

- हमारी संस्कृति में वृक्ष वन्दनीय हैं इसलिए वृक्षों को काटना, उखाड़ना वर्जित है।

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥ (मत्स्यपुराणम्)

- तुलसी का पौधा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। न केवल धार्मिक अपितु चिकित्सा की दृष्टि से भी यह रक्षा करने योग्य है। इसीलिए घर के आँगन में इसके रोपण का महत्त्व है। पुराण और वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार तुलसी का पौधा वायुप्रदूषण को दूर करता है। कहा गया है-

'तुलसी' कानने चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थमित्याहुः नायान्ति यमकिङ्कराः॥

तुलसीगन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः।
दिशो दश पुनात्याशु भूतग्रामांश्चतुर्विधान्॥ (पद्मोत्तरखण्डम्)

- तुलसी का रस तीव्रज्वर को नष्ट करता है। कहा गया है-

पीतो मरीचिचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः।
द्रोणपुष्परसोप्येवं निहन्ति विषमं ज्वरम्॥ (शार्ङ्गधर)

- वृक्षारोपण का महत्त्व-

तारयेद् वृक्षरोपी तु तस्माद् वृक्षान् प्ररोपयेत्।
तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपा नात्र शंसयः॥

द्वादशः पाठः

वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्

प्रस्तुत पाठ छान्दोग्योपनिषद् के छठे अध्याय के पञ्चम खण्ड पर आधारित है। इसमें मन, प्राण तथा वाक् (वाणी) के संदर्भ में रोचक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपनिषद् के गूढ़ प्रसंग को बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से इसे आरुणि एवं श्वेतकेतु के संवादरूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्ष-परंपरा में ज्ञान-प्राप्ति के तीन उपाय बताए गए हैं जिनमें परिप्रश्न भी एक है। यहाँ गुरुसेवापरायण शिष्य वाणी, मन तथा प्राण के विषय में प्रश्न पूछता है और आचार्य उन प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

श्वेतकेतुः - भगवन्! श्वेतकेतुरहं वन्दे।

आरुणिः - वत्स! चिरञ्जीव।

श्वेतकेतुः - भगवन्! किञ्चित्प्रष्टुमिच्छामि।

आरुणिः - वत्स! किमद्य त्वया प्रष्टव्यमस्ति?

श्वेतकेतुः - भगवन्! प्रष्टुमिच्छामि किमिदं मनः?

आरुणिः - वत्स! अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः तन्मनः।

श्वेतकेतुः - कश्च प्राणः?

आरुणिः - पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः स प्राणः।

श्वेतकेतुः - भगवन्! केयं वाक्?

आरुणिः – वत्स! अशितस्य तेजसा योऽणिष्ठः सा वाक्। सौम्य! मनः अन्नमयं, प्राणः आपोमयः वाक् च तेजोमयी भवति इत्यप्यवधार्यम्।

श्वेतकेतुः – भगवन्! भूय एव मां विज्ञापयतु।

आरुणिः – सौम्य! सावधानं शृणु। मथ्यमानस्य दध्नः योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। तत्सर्पिः भवति।

श्वेतकेतुः – भगवन्! व्याख्यातं भवता घृतोत्पत्तिरहस्यम्। भूयोऽपि श्रोतुमिच्छामि।

आरुणिः – एवमेव सौम्य! अश्यमानस्य अन्नस्य योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। तन्मनो भवति। अवगतं न वा?

श्वेतकेतुः – सम्यगवगतं भगवन्!

आरुणिः – वत्स! पीयमानानाम् अपां योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति स एव प्राणो भवति।

श्वेतकेतुः – भगवन्! वाचमपि विज्ञापयतु।

आरुणिः – सौम्य! अश्यमानस्य तेजसो योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। सा खलु वाग्भवति। वत्स! उपदेशान्ते भूयोऽपि त्वां विज्ञापयितुमिच्छामि यदन्नमयं भवति मनः, आपोमयो भवति प्राणस्तेजोमयी च भवति वागिति। किञ्च यादृशमन्नादिकं गृह्णाति मानवस्तादृशमेव तस्य चित्तादिकं भवतीति मदुपदेशसारः। वत्स! एतत्सर्वं हृदयेन अवधारय।

श्वेतकेतुः – यदाज्ञापयति भगवन्। एष प्रणमामि।

आरुणिः – वत्स! चिरञ्जीव। तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु।

शब्दार्थाः

प्रष्टुम्	प्रश्नं कर्तुम्	प्रश्न करने/पूछने के लिए
प्रष्टव्यम्	प्रष्टुं योग्यम्	पूछने योग्य
अशितस्य	भक्षितस्य	खाये हुए का
अणिष्ठः	लघिष्ठः, लघुतमः	अत्यन्त लघु अथवा सर्वाधिक लघु
अन्नमयम्	अन्नविकारभूतम्	अन्न से निर्मित

आपोमयः	जलमयः	जल में परिणत
तेजोमयः	अग्निमयः	अग्नि का परिणामभूत
अवधार्यम्	अवगन्तव्यम्	समझने योग्य
विज्ञापयतु	प्रबोधयत	समझाइये
भूयोऽपि	पुनरपि	एक बार और
समुदीषति	समुत्तिष्ठति, समुद्याति, समुच्छलति	ऊपर उठता है
सर्पिः	घृतम्, आज्यम्	घी
अश्यमानस्य	भक्ष्यमाणस्य, निगीर्यमाणस्य	खाये जाते हुए का
उपदेशान्ते	प्रवचनान्ते	व्याख्यान के अन्त में
तेजस्वि	तेजोयुक्तम्	तेजस्विता से युक्त
नौ अधीतम्	आवयोःपठितम्	हम दोनों द्वारा पढा हुआ

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) श्वेतकेतुः सर्वप्रथमम् आरुणिं कस्य स्वरूपस्य विषये पृच्छति?

(ख) आरुणिः प्राणस्वरूपं कथं निरूपयति?

(ग) मानवानां चेतांसि कीदृशानि भवन्ति?

(घ) सर्पिः किं भवति?

(ङ) आरुणेः मतानुसारं मनः कीदृशं भवति?

2. (क) 'अ' स्तम्भस्य पदानि 'ब' स्तम्भेन दत्तैः पदैः सह यथायोग्यं योजयत-

अ	ब
मनः	अन्नमयम्
प्राणः	तेजोमयी
वाक्	आपोमयः

(ख) अधोलिखितानां पदानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत-

(*i*) गरिष्ठः .....

(*ii*) अधः .....

(*iii*) एकवारम् .....

(*iv*) अनवधीतम् .....

(*v*) किञ्चित् .....

3. उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखितेषु क्रियापदेषु 'तुमुन्' प्रत्ययं योजयित्वा पदनिर्माणं कुरुत-

यथा- प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्

(क) श्रु + तुमुन् = ...

(ख) वन्द्+ तुमुन् = ...

(ग) पठ् + तुमुन् = ...

(घ) कृ + तुमुन् = ...

(ङ) वि + ज्ञा + तुमुन् = ...

(च) वि + आ + ख्या + तुमुन् = ...

4. निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अहं किञ्चित् प्रष्टुम् .....। (इच्छ् - लट्लकारे)

(ख) मनः अन्नमयं .....। (भू - लट्लकारे)

(ग) सावधानं .....। (श्रु - लोट्लकारे)

(घ) तेजस्विनावधीतम् .....। (अस् - लोट्लकारे)

(ङ) श्वेतकेतुः आरुणेः शिष्यः .....। (अस् - लङ्लकारे)

5. उदाहरणमनुसृत्य वाक्यानि रचयत-

यथा- अहं स्वदेशं सेवितुम् **इच्छामि।**

(क) ..... **उपदिशामि।**

(ख) ..... **प्रणमामि।**

(ग) ..... **आज्ञापयामि।**

(घ) ..... **पृच्छामि।**

(ङ) ..... **अवगच्छामि।**

6. (क) सन्धिं कुरुत-

(*i*) अशितस्य + अन्नस्य = ...

(*ii*) इति + अपि + अवधार्यम् = ...

(*iii*) का + इयम् = ...

(*iv*) नौ + अधीतम् = ...

(*v*) भवति + इति = ...

(ख) स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(*i*) **मध्यमानस्य** दध्नः अणिमा ऊर्ध्वं समुदीषति।

(*ii*) **भवता** घृतोत्पत्तिरहस्यं व्याख्यातम्।

(*iii*) आरुणिम् उपगम्य **श्वेतकेतुः** अभिवादयति।

(*iv*) श्वेतकेतुः **वाग्विषये** पृच्छति।

7. पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्यैः लिखत।

योग्यताविस्तारः

ग्रन्थ परिचय- छान्दोग्योपनिषद् **उपनिषत्साहित्य** का प्राचीन एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह सामवेद के उपनिषद् ब्राह्मण का मुख्य भाग है। इसकी वर्णन पद्धति अत्यधिक वैज्ञानिक और युक्तिसंगत है। इसमें आत्मज्ञान के साथ-साथ उपयोगी कार्यों और उपासनाओं का सम्यक् वर्णन हुआ है। छान्दोग्योपनिषद् आठ अध्यायों में विभक्त है। इसके छठे अध्याय में 'तत्त्वमसि' का विस्तार से विवेचन प्राप्त होता है।

भावविस्तारः

आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश देते हैं कि खाया हुआ अन्न तीन प्रकार का होता है। उसका स्थिरतम भाग मल होता है, मध्यम मांस होता है, और सबसे लघुतम मन होता है। पिया हुआ जल भी तीन प्रकार का होता है- उसका स्थविष्ठ भाग मूत्र होता है, मध्यभाग लोहित (रक्त) होता है और अणिष्ठ भाग प्राण होता है। भोजन से प्राप्त तेज भी तीन तरह का होता है - उसका स्थविष्ठ भाग अस्थि होता है, मध्यम भाग मज्जा (चर्बी) होती है और जो लघुतम भाग है वह वाणी होती है।

जो खाया जाता है वह अन्न है। अन्न ही निश्चित रूप से मन है। न्याय और सत्य से अर्जित किया हुआ अन्न सात्विक होता है। उसे खाने से मन भी सात्विक होता है। दूषित भावना और अन्याय से अर्जित अन्न तामस होता है। कथ्य का सारांश यह है कि सात्विक भोजन से मन सात्विक होता है। राजसी भोजन से मन राजस होता है और तामस भोजन से मन की प्रवृत्ति भी तामसी हो जाती है।

इस संसार में जल ही जीवन है, और प्राण जलमय होता है। तैल (तेल), घृत आदि के भक्षण से वाणी विशद होती है और भाषणादि कार्यों में सामर्थ्य की वृद्धि करती है। इसलिए वाणी को तेजोमयी कहा जाता है।

छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार मन अन्नमय है, प्राण जलमय है और वाणी तेजोमयी है।

भाषिकविस्तारः

1. **मयट् प्रत्यय प्राचुर्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है।**

यथा-	**पुंल्लिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
शान्ति + मयट्	शान्तिमयः	शान्तिमयी
आनन्द + मयट्	आनन्दमयः	आनन्दमयी
सुख + मयट्	सुखमयः	सुखमयी
तेजः + मयट्	तेजोमयः	तेजोमयी

2. **मयट् प्रत्यय का प्रयोग विकार अर्थ में भी किया जाता है।**

यथा-	**पुंल्लिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
मृत् + मयट्	मृण्मयः	मृण्मयी
स्वर्ण + मयट्	स्वर्णमयः	स्वर्णमयी
लौह + मयट्	लौहमयः	लौहमयी

3. जल को जीवन कहा गया है। **"जीवयति लोकान् जलम्"** यह पञ्चभूतों के अन्तर्गत भूतविशेष है। इसके पर्यायवाची शब्द हैं-
वारि, पानीयम्, उदकम्, उदम्, सलिलम्, तोयम्, नीरम्, अम्बु, अम्भस्, पयस् आदि।
जल की उपयोगिता के विषय में निम्नलिखित श्लोक द्रष्टव्य है-

पानीयं प्राणिनां प्राणस्तदायत्वं हि जीवनम्।
तोयाभावे पिपासार्तः क्षणात् प्राणैः विमुच्यते॥

4. **मनस् (नपुंसक लिङ्ग) शब्द का रूप**

प्र.	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि	''	''	''
तृ.	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च.	मनसे	''	मनोभ्यः
पं.	मनसः	''	''
ष.	''	मनसोः	मनसाम्
स.	मनसि	''	मनस्सु
सम्बोधन	हे मनः!	हे मनसी!	हे मनांसि!

● अम्भस्, पयस्, यशस्, तेजस्, नभस्, आदि शब्दों के रूप भी मनस् की तरह होते हैं।

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

उपनिषदों की कहानियाँ- डॉ. भगवानसिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।